अलख

अंक 12 वर्ष 2016 दिसम्बर—2016

विषय सूची

01.	जीवन का उद्देश्य सम्पादकीय.....	01
02.	प्रवचन स्वामी विशेषानंद जी	02
03.	निष्काम भक्ति	06
04.	ਕਿੱਸਾ ਪੁਰਨ ਭਗਤ	13
05.	Horse माने गोरा.....	14
06.	ततक्षण नोट किये गये वचन	15
07.	Dhammapada	21
08.	औषधीय गुणों से भरपूर : अदरक	22
09.	वेदांत प्रबोध समिति-वार्षिक.....	23
10.	सत्संग सूचनाएं	24

अगला सत्संग

द्वितीय रविवार

15-जनवरी-2017

यह तो दृष्टि है। कृष्ण भी उसी समय पर हैं, अर्जुन भी है, दुर्योधन भी है और वो बुढ़िया भी है। बुढ़िया यह कहती है कि कृष्ण सर्वोपरि हैं, अर्जुन यह कहता कि अच्छा मित्र है, अच्छे गुरू हैं, द्रोपदी यह कहती है कि यह समय पर रक्षा करने वाले हैं, दुर्योधन यह कहता कि यह ग्वाला है अब हे प्रेमी! यह सब का अपना-2 नज़रिया है।

साभार पृष्ठ 9 से....

अलख अमर विवेचन प्रत्यक्षालय
सिद्ध झण्डी, फगवाड़ा रोड, माहिलपुर
(होशियारपुर) पिन-146105
website:-aavpashram.com
Email- aavpmahilpur@gmail.com

जीवन का उद्देश्य

सम्पादकीय.....

एक बार एक प्रेमी ने श्री गुरू महाराज जी से सविनय प्रश्न पूछा, उसका प्रश्न था, ''हे गुरू महाराज! हम किसी को सत्संग सुनाने का प्रयास करते हैं परन्तु व्यक्ति हमारी बात को समझने का प्रयास ही नहीं करता या वो हमें ही गलत कह देता है। ऐसे में हमारा मन दोबारा हरि चर्चा के लिए तैयार ही नहीं होता। इस स्थिति में हम क्या करें?''

प्रश्न सुनकर गुरू महाराज उस व्यक्ति को साथ लेकर जौहरी की दुकान पर चले गये। वहां जाकर उन्होंने एक हीरा खरीदने के लिए जौहरी से कीमत पूछी। जौहरी ने अति उच्च कीमत बता दी जिसे सुनकर गुरू देव ने हीरा रखा व दुकान से बाहर आ गए। थोड़ी देर बाद गुरू व शिष्य पुनः उस जौहरी के पास चले गए। जाकर पुनः उस हीरे का मोल पूछा। जौहरी ने फिर वही मोल बता दिया।

यह सुनकर गुरूदेव शिष्य सहित लौट आये और उससे पूछने लगे, ''समझ आया?'' प्रेमी कहता, ''जी नहीं।'' तब गुरूवर ने फरमाया, ''यदि ग्राहक उचित कीमत न दे सके तो उसका यह अर्थ नहीं कि हीरा पत्थर हो गया। हीरा तो हीरा है पर चिल्लाता नहीं कि मैं हीरा हूं पर मिले उसको जो मोल दे सके।'' ''जी मैं समझा नहीं'' शिष्य ने कहा। तब गुरूदेव ने समझाया, ''यदि कोई सत्त का मोल न समझ सके तो चिंता मुक्त होकर तूं अपने आप को सत्संग में रख। अपने आप को सत्संगी बना न कि वक्ता। कोई न समझे या बुरा कहे तो भी बुरा मत मान। जीवन के प्रत्येक क्षण में अपना गुरू आप बन

□■□■□

प्रवचन स्वामी श्री विशेषानंद जी महाराज

प्रभु प्रेमी सज्जनों,

पूरा प्रभ अराध्या पूरा जाका नाओ।
नानक पूरा पाया पूरे के गुण गाओ।।

जब भी इस दुनिया में कभी भी परमात्मा की चर्चा ईश्वर का गुणानवाद किसी ने गाया तो उन्होंने गुरू महिमा को, गुरू महाराज की नमस्कार को उनको की हुई प्रणाम के शब्दों को सबसे आगे रखा। कोई भी ग्रंथ पढ़ें, शास्त्र सम्मत किसी महापुरूष के वचन पढ़ें, उसमें पहली चीज़ है गुरू महिमा या गुरू महाराज को नमस्कार। वो नमस्कार भी कैसी कि वचनों के माध्यम से किसी महांपुरूष ने अपना हृदय गुरू महाराज के चरणों में चढ़ाया।

पूरा प्रभ अराध्या, पूरा जाका नाओ।
नानक पूरा पाया पूरे के गुण गाओ।

पूर्ण की बात की गई। पूर्ण की बात कौन करे? कब करे? क्यों करे? हे प्रेमी! यह कुछ ऐसे प्रश्न हैं जिन्हें यदि विचार किया जाए तो तकरीबन-2 हमें सत और असत छांटने की समझ आ जाती। पूर्ण गुरू महाराज का वर्णन, पूर्ण गुरू महाराज की महिमा कौन गायेगा। जिसे पूर्ण और अपूर्ण में कुछ अंतर प्रतीत हो गया। जिसे कुछ समझ आ गयी कि पूरे और अधुरे में कुछ न कुछ फर्क है क्योंकि जिसे मिला ही कोई अधूरा हो, अपूर्ण हो वो कभी पूर्ण की बात कभी चर्चा करेगा ही नहीं। पूरे की बात पूर्ण गुरू महाराज के लिए कुछ महिमा युक्त शब्द कौन कहेगा जिसे जीवन में पहले कुछ अधूरा ही मिला हो। अमृत की बात कौन करे जिसने जीवन में पहले घाट-2 पर जाकर फोका पानी ही पिया हो। रस की निचोड़ की बात कौन करे? जिसने कभी पहले फीका ही फीका खाया हो। हे प्रेमी! जिसने सारा जीवन एक तरफ को ही झुकाव रखा। उसके लिए अंतर करना बहुत मुश्किल क्योंकि चुनाव तो हम तब करते हैं यदि दो हों। जिसने जीवन में एक ही देखा हो वो चुनेगा क्या।

जिसने जीवन में हमेशा से कड़वा ही कड़वा खाया हो वो अन्तर करेगा भी तो क्या क्योंकि उसके पास है ही कड़वा। मिठास का तो उसे प्रश्न भी नहीं कि कुछ मीठा भी होता है पर कभी संयोग वश कड़वा खाने वाले को कुछ मीठा मिल गया, कहीं मिश्री हाथ आ गई कहीं मिठास भरा कोई पदार्थ हाथ आ गया तो वो जीवन में कहेगा चिल्लाएगा कि मिठास कुछ है। हे प्रेमी! जिसके पास एक ही हो वो कभी भी चुनाव नहीं कर सकता। चुनाव कौन करेगा? जिसके पास दो हो। वहां उसे एक को चुनना है। **एक को चुनने के लिए जब अन्तर करेगा गुण अवगुण देखेगा तो वहां पर चुनाव सार्थक होगा। इसी प्रकार जिसने जीवन में देखा ही अधूरा ही अधूरा हो वो पूर्ण की बात करेगा भी क्यों** क्योंकि उस के जीवन में केवल है तो फीकापन, अधूरापन, हीनता वो जब भी कभी बात करेगा तो कई तरफ की बात घुमा फिरा कर कच्ची ओछी बात पर लाकर खड़ी कर देगा।

जैसे किसी महांपुरूष के जीवन का एक वृतान्त है कि जब उनका बचपन था तो उन्होंने बहुत तरह की पूजाएं करी, पाठ करे, जाप करे और-2 जो भी समय के साधन रहे होंगे वो सब कुछ करके देखा। जब उम्र थोड़ी और बढ़ी, थोड़ी अक्ल भी बढ़ी,

थोड़ा शरीर भी बढ़ा संसार में बिचरे तो बिचर कर ***कुछ ख्याल आया कि जो कुछ भी मैं करता हूं यह तो मेरे अपने बनाये हुए नियम हैं। तो क्यों न कुछ ऐसा किया जाए जो पहले से ही चला आ रहा।*** अब जो पहले से चला आ रहा जब उसके लिए प्रयास किया तो प्रयास क्या थे कि किसी सन्यासी को मिल लो, किसी साधू-संत को मिल लो, किसी योगी तपस्वी को मिल लो उनको भी मिल कर देखा बात तो फिर वही कि पहले हम अपनी मर्जी से करते थे अब जरा उनके कहने पर करना है।

सन्यासी कौन, योगी कौन ? हे प्रमी ! अब इनके जबाव अध्यात्मिक दृष्टि से तो बहुत और हैं। परन्तु संसारिक दृष्टि से क्या हैं लोग सन्यासी उसे कहते हैं जो आग का त्याग कर दे, सर्दी में आग के ऊपर पका कर न खाए, आग के ऊपर कुछ गर्म करके न खाए, कच्चे फल खाए, कुछ ऐसी चीज़े खाए जिनकी जड़ों में फल हो जैसे शकरकंदी इत्यादि उनको सन्यासी कहा गया। हे प्रेमी ! कागजी पत्री सन्यासी। योगी कौन ? जो सुबह शाम योगाभ्यास करे अंग टेढ़े-मेढ़े करे Exercise करे, अब यह जो महात्मा थे बचपन में जब इन्हें कुछ ख्याल आया कि किसी आदि प्रथा को पकड़ा जाए तो ऐसे सन्यासी साधुओं को मिले और उन्होंने बता दिया कि तुम व्रत करो, उपवास करो अष्टमी का व्रत, एकादशी का व्रत उन्होंने वो भी किये यथा सम्भव जो समय पर रहा होगा किया आयु बढ़ती गयी चित्त में चंचलता आती गयी पर बात न बनी। तो अंत में थक हार कर कभी किसी पेड़ के नीचे बैठ गये। दुखी होकर पेड़ के नीचे बैठे हैं देखा सामने किसान हल चला रहा। बड़े दुखी मन से लाचार आंखों से उसे देखते हैं कि काश ! मेरे से तो यह किसान अच्छा। कम से कम कमाकर अपना और अपने बच्चों का पेट तो भरता है। कहां पहले यह विचार था कि जो मैं यह करता हूं। यही सर्वश्रेष्ठ है। जब नहीं कुछ बना शांति नहीं हुई, तसल्ली न आई तो विचार उधर के हो गये। अब उधर के विचार हुए तो किसान के पास पहुंच गये कहते भाई कोई हल बैल कोई जोड़ी मुझे भी दे दे या मुझे अपने साथ सांझीधार बना ले। काम मैं करूंगा चीज़ें तेरी। तो वो किसान कहता कोई बात नहीं जरूर बहुत अच्छी बात कि जितना हम मिल बांट कर करेंगे उसमें 3 हिस्से तेरे। एक मेरा तो वे बहुत खुश हो गये। कहते फिर तो बहुत अच्छी बात है तीन हिस्से मेरे एक तेरा। मैं भी काम करूंगा **अब वो सन्यासी करे क्या कि जो कुछ जीवन में इकट्ठा किया था उसका वर्णन करे पर वो जो किसान था वो चुपचाप अपनी एक टक सुरती लगा कर लगा है हल बैलों के पीछे पर शांत है।** यह चलता तो साथ-2 बोले बहुत। बस जी फिर इतने व्रत किये, इतना यह किया बना कुछ नहीं फिर हम वहां चले गये बोले जा रहा-बोले जा रहा क्योंकि जिसने जीवन में इकट्ठा ही कबाड़ किया हो अब निकलने की बारी। वो किसान बहुत शांत, एकाग्र।

जब यह बोलते-2 शायद थक गया होगा या कैसे भी कारण से चुप हुआ और चुप होते-2 कहता तो फिर आप मुझे सुन रहे हैं न। किसान कहता नहीं। वो कहता मैं इतनी देर से बोल रहा हूं और आपने सुना ही नहीं। तो वो किसान कहता कि मैं अपने आप को सुन रहा हूं इसलिए मैं तेरे को नहीं सुन सकता। कहता जी मैं समझा नहीं। कहता भाई जितना कुछ तूने अब तक कहा जो-जो कुछ तूने आज तक किया इसके पीछे करने का मूल कारण क्या है, क्यों किया ? जप-तप, व्रत, पूजा-पाठ, धर्म-कर्म, मन्दिर-मस्जिद सब कुछ किया पर क्यों ? क्या चाहिए था, कौन सी ऐसी तलब थी जो इन साधनों

के बिना पूरी नहीं हो रही थी तो वो जो आगे चलकर सन्यासी हुए थे वो व्यक्ति कहता कि बस कहता मुझे अन्दर से शांति की तलाश थी। तो कहता कि क्या शांति आ गयी तो कहता नहीं। किसान कहता तुझे इन कामों में शांति न आई। तूं मेरे साथ खेती में लग गया। खेती में न आएगी किसी और के साथ लग जाएगा वहां न आयेगी तो कहीं और चला जाएगा।

सारा जीवन घूमते रहेगा यह वो हालत हो गयी कि हिरण ने पेशाव किया उसको अपने पिशाव से कस्तूरी की गंध आई अब उस गंध के कारण वो इतना लालायित है, इतनी उसकी वासना है कि मुझे कहीं से कस्तूरी मिल जाए। उस खुशबु के लिए पागल हुआ हिरण कभी दाएं भागता, कभी बाएं, कभी आगे, कभी पीछे क्योंकि इस बात को भूला हुआ है कि कस्तूरी तेरे अन्दर है। तो कहता भाई मेरे बिलकुल यही चीज तेरे साथ है। तूं कभी उस शान्ति के लिए मन्दिर, कभी मस्जिद, कभी गुरूद्वारे, कभी कहीं, कभी कहीं, कभी पाठ, कभी योगी, कभी सन्यासी, कभी जंगल कौन सी ऐसी जगह जो तूने छोड़ी हो मिला मिलाया तो फिर कुछ नहीं।

हे प्रेमी! कभी हम रामायण पढ़ने बैठे तो पढ़े जा रहे उसको घिसे जा रहे, गुरूवाणी पढ़ने जा रहे पाठ में आनन्द ले रहे क्योंकि उस समय यह भूल गये कि यह ग्रंथ हैं किस लिए। जिसे लक्ष्य याद हो वो कभी उलझता नहीं जिसे लक्ष्य का पता न हो वो कभी छूटता नहीं। सदा ही उलझा है तो वैसे वो थे तो किसान ने समझाया कहता यह बात समझ कि तूने आज तक की उम्र कहां-2 लगा दी। सिट्टा तो फिर भी कुछ नहीं निकला जैसे आज तक उम्र चली गई ऐसे आगे फिर चली जाएगी। पहले तुझे था कि मैं कुछ जप-तप करूं, मुझे देखकर तुझे यह आ गया कि अच्छा जप-तप छोटे हैं अब कमाकर अपने बच्चों को खिलाऊं। वो बड़ा है। हे प्रेमी! यह कुछ ऐसे Certificate हैं जो सारी दुनिया ने अपने लिए बना रखे। सन्यासी यह Certificate उठाकर घूमते हैं कि बस अपना भला करो लोगों का भला करो उनका यह है। गृहस्थी यह कहता है कि अपने बच्चों का पालन पोषण कर लो यह सबसे बड़ा तप है। अपने माता पिता की सेवा कर लो यह तप है, सबने अपनी-2 नकली University के Certificate बना रखे लेकर घूमे जा रहे।

हे प्रेमी! एक चीज़ हमेशा याद रखना कर्तव्य कर्म को करके तूने कोई बहुत बड़ा पुण्य नहीं कर लिया। तेरे स्वाभाविक कर्म हैं इनसे छूट नहीं सकता क्योंकि तुझे निभाने ही पड़ेंगे। न निभायेगा तो तेरा संसार हिलेगा। तेरा Balance खराब हो जाएगा। इसलिए इन कामों को कहीं भक्ति मत समझ लेना। मूर्ख आदमी इन्हीं चीजों को भक्ति मान लेता पर हे प्रेमी! यह तो कर्तव्य कर्म हैं। भक्ति बहुत अलग चीज़ भक्ति का अर्थ कि इनमें लगे-लगे भी हम अपने आपे की सुध ले जाएं जैसा कि उस किसान ने समझाया था **किसान ने कहा कहता देख भाई जो-जो कुछ तूने आज तक किया या जो अब कर रहा शान्ति इस किसी काम में नहीं। तो कहता फिर मुझे बता मेरा मार्गदर्शन कर कि मैं क्या करूं जिससे मुझे शान्ति मिले।** तो हे प्रेमी! उस किसान ने साथ लिया। झाड़ियां सी थी उनके पीछे ले गया बिठाया बस सिर पर हाथ रखा, जैसे ही सिर पर हाथ रखा वो व्यक्ति जो आगे चलकर फिर महात्मा बने, वो सज्जन बहुत ही झूम उठे पर आंखों से आसूं जाने शुरू हो गये आंखों से आसूं भी जा रहे आंखे खुलीं तब भी बहुत रोया चरण पकड़े कहता मेरे से बहुत बड़ी भूल हो गयी। क्या कि मैंने अपना बहुत समय इन्हीं चीज़ों में लगा दिया कभी

कुछ जप, कभी तप, कभी कुछ और मैं भूला ही रहा कि आखिरकार जो मुझे सुगंध आती है वो कहां से आ रही। मैं भूला ही रहा कि सुगंध तो मेरे अंदर की है और मैं घूम रहा हूं बाहर। गुरूवाणीकार उस बात को ऐसे समझ गये महांपुरूषों का वचन है:—

आगासी सर भरिया नीर तीस पर बहत कमल बसतीर।
भंवरा लभता ता की गंध नानक बोले बिखमी संध।

हे प्रेमी! कभी फूलो के इर्द-गिर्द भंवरों को देखना भंवरा एक वो जीव है यह कहीं किसी बहुत सख्त लकड़ी के ऊपर बैठ जाए उसमें छेद कर देता। यदि करने पर आ जाए तो सख्त से सख्त कोई लकड़ी का फट्टा हो पेड़ हो उसमें छेद कर देता पर वही भंवरा कमल के फूल में बंध होकर मारा जाता। प्रकृति है कमल का फूल बहुत कोमल पर वहां मारा गया क्यों क्योंकि हे प्रेमी! गंध के आधीन हो गया। कुछ लेने गया किसी स्वरूप के ऊपर ऐसा मोहित हुआ कि बस काम खत्म उसी में ही प्राण दे गया तो महांपुरूषों ने वहां से एक उदाहरण ली कहते:—

आगासी सर भरिया नीर

कहते आकाश सरोवर में जल भरा हुआ।अब हे प्रेमी! आकाश सरोवर का अर्थ कुछ सज्जण आकाश को देखते हैं। यहां उस आकाश की बात नहीं तुम्हारे अपने आकाश की बात है इस कपाल की बात इसे महांपुरूषों ने आकाश कहा। सर का मतलब होता सिर नहीं। सर का मतलब है सरोवर भरिया नीर अर्थात अमृत कुंड से भरा हुआ अमृत से भरा हुआ सरोवर हे प्रेमी! तेरे अन्दर है तेरे भीतर सब कुछ है बाहर कुछ लेने नहीं जाना पर यदि कहे मिला या नहीं तो हे प्रेमी! मिलता तब तक नहीं जब तक जीवन में प्राप्ति के लिए प्रयास नहीं। जीवन में यह कोशिश ही नहीं कि कुछ चाहिए भी तेरे जीवन का सारा प्रयास या तो है कमाने के लिए या खाने के लिए। कुल मिलाकर जोड़ देख लेना जीवन में या कमाने के लिए या खाने के लिए। कमाने का अर्थ है कमाई के तरीके। खाने का अर्थ है उस पैसे को खर्चने के तरीके। फिर वो तरीका चाहे पहनने का हो, देने का, लेने का, खाने का, पीने का। कमाना और खाना यह जीवन के तेरे दो हिस्से हैं पर हे प्रेमी! तीसरा हिस्सा है लगाना—लगाने का अर्थ है जो तेरी वृत्ती उस पैसे में किसी भी तरीके से अटकी है वो ध्यान में अटक जाए। वृत्ती वही है इधर से उखाड़कर वहां लगानी है बस और कुछ नहीं करना।

आगासी सर भरिया नीर, तिस पर बहत कमल बस्तीर।

कहते बस्तीरण रूप से खिलरे हुए रूप से, विस्तृत रूप से उस सरोवर में कमल ही कमल खिले हुए हैं। हे प्रेमी! वहां कमल किस चीज़ को कहा। कमल का अर्थ यह नहीं कि वहां कोई फूल खिले हैं या तेरी बुद्धि में या कोई फूल खिल गये हैं। कमल का अर्थ कमल से हम किस चीज़ का अर्थ लेते हैं महांपुरूषों ने कहा कमल विसतीर विसतार है। जिस प्रकार कमल खिला हुआ है ऐसे ही तेरी बुद्धि में हर समय परमात्म प्रकाश खिलरा हुआ है। कभी आप अपने किसी जगह कमल खिले हुए देखे हों सही तरीके से कुछ-2 सरोवर ऐसे होते हैं जिनमें पानी नज़र नही आता जब कमल खिलते हैं तो पूरा तालाब बराबर भर जाता। जुड़े होते हैं एक से एक, एक से एक। यह चीज़ सही देखने के लिए मान सरोवर में है। इतने ज्यादा कमल हैं बराबर कि वहां पानी नज़र नहीं आता तो हे प्रेमी! महांपुरूष वहीं से यह नक्शा लेते हैं **तिस पर बहत कमल विसतीर** कि जैसे कमल उस सरोवर को घेरे हुए है ऐसे ही परमात्मा तेरे आकाश रूपी सरोवर को अमृत कुंड को घेरे हुए है या यह कहें कि तेरे रोम-रोम में वो परमात्मा रचा बसा है। पर तूं जब भी उसको समझेगा तो Third

Person करके तीसरा करके क्योंकि पता नहीं परमात्मा कोई और है हे प्रेमी! वो तेरा अपना आप है। तेरी सहज स्थिति है। जिसको महांपुरूषों ने परमात्मा करके कहा-

भंवरा लभता ता की गंध ।

खुशबु देता हो वो अपनी कभी-2 उसी चीज़ को देखकर विज्ञान ने एक बहुत अच्छी चीज़ बनाई नाम तो मुझे उसका नहीं पता एक किस्म की Spray है। उसमें पीछे बोतल लग जाती वो पांच दस मिन्ट बाद फिस कर देता। वो होता तो इसलिए कि कमरे में सुगंध फैली रहे पर हे प्रेमी! परमात्मा भी तुझे थोड़ी-2 देर बाद फिस कर देता। तुझे अन्दर से महसूस होता कि कुछ है। ***ग्रंथ पढ़ता तो खुशबु आ जाती कि कुछ है कभी मन्दिर-मस्जिद के आगे से निकले थोड़ी सी खुशबु आती कि कहीं न कहीं कुछ है*** पर ज्यों ही आगे गये त्यों ही फिर बदबू आ गयी भूल गया, मस्त फिर कभी कोई मुसीबत आई फिर ध्यान आया कि कुछ है, फिस हो गयी बस। हे प्रेमी! जैसे वैज्ञानिकों की चीज़े करती ऐसे परमात्मा भी दबा देता हल्का सा। अन्दर से लहर आती कि कुछ तो है कभी-2 सोने लगा नींद नहीं आ रही तो ख्याल जब परमात्मा की तरफ को जाए तो ध्यान आता कि कुछ तो है कहीं कुछ तो है बहुत सोचेगा-सोचेगा इतना सोचेगा कि नींद आ जाएगी पर जवाब नहीं आएगा। **भंवरा लभता ता की गंध** हे प्रेमी! महांपुरूष कहते मन भंवरे की तरह है परमात्मा कभी-कभी गंध छोड़ता यह कभी-2 उसको ढूंढ़ता है। इसे कभी फिर ख्याल आता कि कहीं है कुछ है। सृष्टि में कुछ ऐसी घटना घटी प्रकृति में कोई फूल खिला देखा तो ध्यान आया कि कुछ तो है। जिसने इस छोटे से फूल को सम्भाला वो कुछ तो है। कभी कोई घटना घट गई बहुत बुरा **ऐसा कोई Accident हुआ कि पूरी बस की बस तो मारी गई एक बच्चा बच गया कभी उसको देखकर ध्यान आता कि कुछ तो है बचाने वाला कहीं तो है। भंवरा लभता ता की गंध** पर अब हे प्रेमी! वो लगातार गंध नहीं छोड़ता। यह उसकी खासियत है क्योंकि उसे मोहित करने की कला पता है हल्की सी गंध छोड़ दी फिर कभी कोई हल्की सी फिस कर दी बस हो गया ज्यादा नहीं। थोड़ा सी उसने खुशबु दी अपना आपा महसूस करवाना चाहा लोग कहते हैं कि जब परमात्मा की कृपा होगी तो मिल जाएगा। हे

निष्काम भक्ति

बगदाद की बात है, एक दिन फकीर जुनैदा कहीं जा रहे थे। राह में उन्हें एक नाई मिला। जुनैदा ने अपनी सहज आदत के अनुसार नाई से कहा—खुदा की खातिर मेरी भी खजामत बना दो।

नाई ने अन्य ग्राहकों की हजामत बनाना बंद करके सबसे पहले फकीर जुनैदा की हजामत बनाई।

कुछ दिन बाद जुनैदा, नाई को उसका मेहनताना देने पहुंचे। नाई ने पैसे लौटाते हुए कहा,— ''आपको शर्म आनी चाहिए। आपने तो खुदा की खातिर हजामत बनाने के लिए कहा था, रूपये की खातिर नहीं।''

फकीर जुनैदा नाई से बहुत प्रभावित हुए। जीवन भर जुनैदा कहा करते थे कि निष्काम भक्ति मैंने एक नाई से सीखी है।

प्रेमी! वो खुशबू देता है किसी को तो दिन में पता नहीं कितनी बार यह विचार दे देता कि मैं हूं तूं ढूंढ मैं हूं।

नानक बोलैं बिखमी संध।।

पर नानक कहते यह संधि यह मेल बिखमी अर्थात मुश्किल है क्यों क्योंकि कहते चीज़ अन्दर है तेरी तालाश बाहर है। कमल कहीं और खिल रहे तूं लेने कहीं और जा रहा चीज कहीं और विकसित है लेने कहीं और जाये जा रहे। मिलता कहीं और लेने चले कहीं और हे प्रेमी! दिशा ही उल्ट हो गयी बात अन्दर की दिशा की है। ढूंढ़ा जा रहा बाहर की दिशाओं में **नानक बोलैं विखमी संध** इसलिए यह संधि मुश्किल है। तो मैं अपने उस पहली घटना पर कहानी पर दौबारा आऊं वो जो किसान था उसने जब इस व्यक्ति को बिठाया ध्यान में उतारा तो यह बहुत रोया। रोया कहता मैं कहां घूमता रह गया चीज़ मेरी अन्दर कमल कहीं और खिले हैं कहता मैं कहीं और ही खुश्बु ढूंढ़े जा रहा। पदार्थ कहीं और था मैं कुछ और ही लेने जा रहा बहुत गल्त हो गया। हाय कहता मैंने इतनी उम्र गंवा दी। अब जो मैंने गंवा दी अब वो तो मेरे हाथ में नहीं आयेगी तो वो जो किसान थे वो फिर बैठ गये उन्होंने फिर समझाया कहते देख तुझे मिलने के बावजूद भी सम्भालना नहीं आ रहा। कहता जी मतलब कहता **जो निकल गया सो तो निकल गया जो है तूं उसको तो सम्भाल। पहले था नहीं इसलिए गंवा दिया अब है तो पिछला सोच-2 कर गंवा दिया। हे प्रेमी! तकरीबन दुनिया में होता ऐसे ही है या तो परमात्मा का मार्ग नहीं मिला आधा समय तो इसलिए हाथ से जाता रहा।** जिन्हें मिल गया वो इस विचार में गंवा देते हैं कि अच्छा पहले शरीर ठीक था तो कर लेते थे अब तो होता नहीं इस दुख में गंवाये जा रहे। कुछ इस दुख में गंवाये जा रहे कि मैंने तो इतना समय पहला गंवा दिया।

हे प्रेमी! आधा तो तेरा वैसे ही निकल गया आधा इन फालतू की चिंताओं में चले जा रहा इसलिए सब से **पहला संदेश सत्संग में आने का यह समझना कि यदि तुम घर से सत्संग के लिए चलते हो तो पहला प्रयास करो कि Present की बात करें जो आज है उसको संभालें पिछला छोड़।** जो जाता जाने दे जो चला ही गया उससे तूं क्या ले लेगा। जो है उसके लिए प्रण ले, उसके लिए कुछ निश्चित समय बना। उसके लिए प्रयास जारी रख कि जो करना सो करना ही है उसके लिए जीवन में कुछ कसम ले और हे प्रेमी! वो कसम कैसी हो वो किसी पर आधारित न हो क्योंकि जब हम किसी पर आधारित कोई प्रण लेते हैं तो वो प्रण ज्यादा देर चलता नहीं वो कैसा होता है कि हमने प्रण ले लिया कि जब तक यह पड़ोसी चलता है तब तक हम चलेंगे। अर्थात कि यह पड़ोसी न चलेगा तो हम भी सो जाएंगे। हे प्रेमी! वो प्रण किसी मित्र का मत लेना वो प्रण सिर्फ इतना हो कि एक मैं हूं एक मेरे गुरू महाराज हैं बस। तीसरा नहीं क्योंकि पंजाबी में एक कहावत है कि तीजा रलिया घर गलिया हे प्रेमी! यह भक्ति भी ऐसी है तीसरा आ गया काम खराब हो गया बस।

मुझे किसी ने एक प्रश्न किया था अभी हफता दो हफता पहले की बात कि बहुत पुराने-पुराने ऐसे प्रेमी होते हैं जो बहुत साल चलकर फिर गिर जाते हैं, हट जाते हैं ऐसा क्यों? हे प्रेमी! बात वही है तीजा रलिया घर गलिया जब किसी ने अपने और गुरू महाराज के बीच में तीसरे को खड़ा करके देखा काम खराब या यह कहें कि जब हम गुरू महाराज को किसी तीसरे की दृष्टि से देखते हैं तो भी गये। तूं

गुरू महाराज को सिर्फ अपनी दृष्टि से समझ। तूने क्या देखा तूं सिर्फ इतना समझ और किसी की दृष्टि से देखेगा तो नहीं क्योंकि हे प्रेमी! समय पर महांपुरूष एक हों उनको देखने वालों की दृष्टियां कई हैं।

एक महाभारत के समय में ऐसा भी समया आ गया कि उधर तो लड़ाई लगी है उधर अर्जुन को प्यास लग गई। अर्जुन कहते हैं कि हे भगवान! कि मुझे प्यास लगी है तो भगवान मार्ग दर्शन करते हैं कि इधर को जा ऐसे जा जो भी कोई घर घाट इत्यादि मिले वहां पानी पी लेना पर अपना परिचय मत देना अपने बारे में मत बताना कि तूं कौन है? सिर्फ जाओ पानी पीओ और आ जाओ और यदि वहां कुछ बोले तो चुप-चाप सुन लेना ठीक है **क्योंकि हे प्रेमी! हम समय पर मान जाएं यही बहुत बड़ी बात क्योंकि न मानना ही आधी बिमारीयों की जड़। अर्जुन कहते हैं जो आज्ञा जैसी भी है ठीक है।** गये जैसे कुछ जंगली रास्ता था थोड़ा सा निकल कर आगे गये तो झोंपड़ी दिखी, झोंपड़ी में प्रवेश किया तो देखा कि एक बुढ़िया है। कहते कि माता प्यास लगी है उसने पानी इत्यादि दिया। पहले पूछ लिया कि तूं किनकी तरफ से लड़ रहा कहता जी पांडवों की तरफ से। कहती अच्छा शाबाश बहुत अच्छी बात। कृष्ण के साथ है कहते हां। कहती बहुत अच्छी बात। बहुत साधुवाद कई तरह-2 से ऐसे आर्शीवाद दे दिए। तो अब देखा सामने तलवारें लटकी हुईं।

अर्जुन देखते हैं कि एक अकेली बुढ़िया जिसमें तलवार उठाने की हिम्मत नहीं उसने तलवारें ऐसे सजा कर रखी कि यहीं अभी उठा लो इतनी तैयारी। है अकेली पास कोई नहीं पति नहीं, बच्चा नहीं तो हाथ में कच्चे बर्तन हुआ करते थे वो पकड़ा है अर्जुन ने पानी पीने के लिए पर पीते-2 पूछ लिया कि माता यह तलवारें किसके लिए तो जैसे ही पूछा उस बुढ़िया ने देखा कहती पहली तलवार अर्जुन के लिए है। जैसे कई बार आप देखो न चाय-पानी पीते-2 कोई हंसी की बात बता दे तो नाक से पानी बाहर आ जाता तो मुझे जो अनुभव हुआ वो अर्जुन के भी आया होगा। कहते हैं वो क्यों? **कहती कि कुछ लोग ऐसे हैं इनका काम ही दुख देना है। कहीं कहती कि मुझे उस युद्ध में अर्जुन मिल जाए पहले उसको काटना मैंने। कहते जी कारण? कहती कि सारा जीवन तो वो बना रहा भाई, दोस्त, यह वो पर जब मुसीबत पड़ी आप पीछे बैठ गया कृष्ण को आगे लगा दिया रथ खींचने** उसको यह शर्म नहीं आई कि जिसे वो भगवान कहता है उससे क्या रथ खिंचवाएगा।

पहला काम उसका करना। कहते दूसरी। कहती दूसरी द्रोपदी के लिए। वो क्यों? कहती वैसे तो उसको बहुत अहंकार कि मेरे पांच पति हैं मैं कुल बधु ऐसे घराने की पर जब पड़ी मुसीबत सारे साथ छोड़ गये कोई काम न आया तो लगी हे कृष्ण-हे कृष्ण करने। तब उसे बहुत याद आई। जब सुख का समय है तब कोई नहीं, जब मुसीबत पड़े तो सिर्फ एक कृष्ण है। कहती दूसरा काम उसका करना। तो कहते तीसरी तो बूढ़िया कही वैसे तो पांडव सारे काटने के योग्य हैं। कहते क्यों? कहती कि जब सब तरह का बल था, स्थिति ठीक थी तब इन्हें चाहिए था कि कृष्ण को उचित सम्मान देते, आज समय विपरीत है, कोई साथी नहीं तो आज पहले कृष्ण है बाकी के बाद में हैं। तो कहती कि मेरे हाथ कहीं पांडव लगें तो पहले वो काटने मैंने पर कहती कि तूं मत घबरा तूं कृष्ण का सेवक है तूं जा, तूं लड़ उनकी तरफ से। तो अर्जुन पता नहीं पानी पिया था कि नहीं लेकिन युद्ध में पहुंचते ही भगवान ने पूछा कि कैसी

रही। कहता कि उसने आंखे खोल दी।

तो हे प्रेमी **यह तो दृष्टि है। कृष्ण भी उसी समय पर हैं, अर्जुन भी है, दुर्योधन भी है और वो बुढ़िया भी है। बुढ़िया यह कहती है कि कृष्ण सर्वोपरि हैं, अर्जुन यह कहता कि अच्छा मित्र है, अच्छे गुरू हैं, द्रोपदी यह कहती है कि यह समय पर रक्षा करने वाले हैं, दुर्योधन यह कहता कि यह ग्वाला है अब हे प्रेमी! यह सब का अपना-2 नज़रिया है। वहीं कंस को देखो कंस कहेगा यह तो है ही कुछ नहीं इसको तो ऐसे ही मार दूं, उसकी अपनी दृष्टि है। एक ही समय पर एक ही व्यक्ति को जितनी आंखों ने देखा उनके उतने विचार हैं। अब मैं तुम से पूछता हूं बताओ कौन सही है ? पर हे प्रेमी! यहां गलत और ठीक का निर्णय नहीं। गलत और ठीक का कभी निर्णय नहीं हो सकता। भावना का सवाल है** कि हम किसे किस दृष्टि से देखते हैं क्योंकि न उस समय पर दुर्योधन गलत है न अर्जुन गलत है पर भाव का सवाल है दुर्योधन है वो सिर्फ इतना कहता कि यह ग्वाला है ठीक है अब भई तेरी अपनी भावना। हे प्रेमी! यहां भाव का सवाल है गलत और ठीक कभी चुने नहीं जा सकते। गलत और ठीक का निर्णायक समय है। समय आने पर यह पता चलता क्या गलत था, क्या ठीक है। पहले तुम किसी चीज़ का निर्णय नहीं कर सकते। अब रही बात खोट की **हे प्रेमी! समय पर भगवान कृष्ण जिन्हें अवतार कहा जाता गिनते-2 उनमें भी शिशुपाल ने 108 दोष देख लिये, जो कि खोट थे ही नहीं जायज कारण थे।** कारण सारे जायज थे, शिशुपाल ने कभी गलत कारण नहीं दिया। जितनी गालियां शिशुपाल ने दी थीं वो जायज कारण थे, कारण क्या दिये थे। उसने उन कारणों में गिना था कहता कि यह ग्वाले का पुत्र है इसे क्यों पूजा जाए। उस समय के मुताबिक यह कारण ठीक था। शिशुपाल यह कहता है कि जिसे हम सब लोग इस समय इस यज्ञ में पूजना चाहते हैं वो एक निकृष्ट जाति का है। यह वो छलिया आदमी है जिसने समय-2 पर छल किया यह भी कारण जायज था **यह वो आदमी है जिसने नहाती स्त्रियों के वस्त्र उठाए। आज के हिसाब से देखो कितना बड़ा पाप। शिशुपाल के कारण सारे जायज थे पर जब भगवान ने उसे मारा तुम आज भी तालियां बजाते हो कि बहुत अच्छा किया।** हे प्रेमी! अब तूं बता तूं किस चीज़ को सही करके तालियां बजाता है। भगवान की कृति को या शिशुपाल की तालियों को। तो कारण यह है सही और गलत का निर्णय समय आने पर है।

जब इन सारी बातों को किसी एक तपस्वी ने महर्षि संदीपनी को पूछा था कि कृष्ण आपके शिष्य रह चुके हैं उन्होंने यह-यह कर्त्तव्य किये, यह-यह कर्म किये हैं क्या वो दण्ड के लिए अपराधी हैं ? महर्षि संदीपनी कहते कि कृष्ण फिर भी पूजनीय हैं। हे प्रेमी! अब उनकी अपनी दृष्टि है। सो अंतिम बात यह है कि कभी भी किसी के निर्णय में मत चले जाना किसी के भी क्योंकि तुम जो निर्णय दोगे वो तत्कालीन है अब का है। आगे तक का नहीं है और बात वही आ गई जब अपने में और गुरू महाराज में किसी तीसरे को लाएगा तो दिक्कतें होंगी इसलिए भगवान ने अर्जुन को कहा था कि पानी पीने चला जा अपना परिचय मत देना क्योंकि तेरे परिचय देने से तीसरा बीच में आ जाएगा बस कहते कोई तीसरा नहीं। सबका अपना-2 भाव है, किसी का अपना भाव है, कोई पापी की दृष्टि से देखता, कोई चोर की दृष्टि से देखता। हे प्रेमी! जिसकी दृष्टि है वो उसकी

अपनी भावना है तूने क्या लेना। कोई किसी भी दृष्टि से चले।

मुझे गुरू महाराज के एक वचन याद हैं कभी कोई सज्जन थे उनका कुछ परिवारिक मसला था उन्होंने बहुत बातें कह दी यह बात वो बात बहुत कुछ कह दिया। अंत में गुरू महाराज सुनते रहे बोले कुछ नहीं। सुनते रहे काफी सुनते रहे जब वो बोल बला कर ठंडा हो गया तो कहता जी अच्छा कुछ गलत कहा गया हो तो क्षमा करना। गुरू महाराज कहते भाई न तो मैं तेरे इन वचनों में फंसा न मैं उनमें फंसा क्योंकि कहते मुझे तो यह ध्यान रखना कि मैं अपना आपा न गिरा दूं। हे प्रेमी! यह दुनियां में जीने की कला है। हम किसी भी स्थिति में अपना आपा न गिरा दें, यहां कोई कितना अच्छा है, कितना बुरा है इसमें कभी मत जा क्योंकि यह निर्णय जो हम देंगे यह तत्कालिक हैं, यह तो आज के हैं आगे दस साल बाद क्या Impression हो कोई पता नहीं। बीस साल बाद क्या प्रभाव हो कोई पता नहीं सौ साल बाद कितना उचित अनुचित प्रभाव हो यह पता नहीं। इसलिए कभी भी महांपुरूषों के जीवन में एक चीज़ पाओगे किसी भी तत्वज्ञानी के जीवन का आप कोई घटना क्रम पढ़ो जब भी कोई विश्व में कोई घटना हुई तो उन्होंने निर्णय नहीं दिया कभी भी क्योंकि उन्हें पता है निर्णय आज के हैं लम्बे नहीं पर भाव आगे चलकर पता चलता और हे प्रेमी! जब हम निर्णय दे देते हैं तो हम अपनी Category बना लेते हैं। उस Category में उलझे-2 हम सारा जीवन ऐसे ही फिर निकाल देते हैं। कभी किसी Category में मत आना एक ही चीज़ बना अपना खाना एक ही किस्म का रख कि मैं और मेरे गुरू महाराज बस, तीसरा नहीं। जब कोई तीसरा बीच में आएगा उसी समय तेरे लिए दिक्कत हो जाएगी क्योंकि जब तूं दुनिया को नंगी आंखों से देखेगा। तो दुनिया रंग बिरंगी है पर ज्यों ही दुनिया तूं अपनी दृष्टि की बजाए आंखो पर चश्मा चढ़ा कर देखे पीला, नीला, लाल, हरा कोई भी, तो जिस रंग का चश्मा होगा दुनिया उस रंग की हो जाएगी। फिर तुझे दुनियां रंग बिरंगी नहीं एक रंग की दिखाई देगी इसलिए हे प्रेमी! गुरू महाराज को कभी भी देखे तो किसी भी तरह का चश्मा चढ़ा कर मत देखना। वो चश्मा मित्र का हो, प्रेमी का हो, पत्नी का हो, पति का हो वो चश्मा हो तो सिर्फ तेरे अपने विचारों का अपने आप का, तेरी अपनी दृष्टि का। कोई क्या कहता है। तूं उस दृष्टि से मत चल, तेरा हृदय क्या कहता है, वो पकड़।

हे प्रेमी! घरों में कलेश होते हैं अक्सर आप देखते हो जब लड़के की शादी हो जाए तो पत्नी यह कहती है कि यह मां की सुनता मां कहती यह पत्नी की सुनता तकरीबन यह सब को Tag लगता है तकरीबन। क भी कारण खोजकर देखना क्या है, उसका कारण अंतत: क्या निकलेगा कि जो बेचारा लड़का है उसकी अपनी दृष्टि है ही नहीं। उसको रात को पत्नी पंप दे दे वो सुबह मां के लिए है। शाम को मां पंप दे दे वो पत्नी के लिए है। उसको दरअसल यह पता ही नहीं कि मैं भी कुछ हूं तो फुटबाल की तरह है इधर से किक आई उधर गोल उधर से किक आई इधर गोल। गोल होते सारा जीवन गोल ही करता वो।

अन्त में मरने की बारी पूछो क्या हो गया तो फुटबाल कहता मैं तो गोल हो गया। किसी ने गोल किया नहीं, वो गोल ही हो गया। खा-खा खाकर, ठेढ़े खा-खा कर बुरी हालत क्योंकि समझता नहीं उधर भी स्त्री है, उधर भी स्त्री है। स्त्री होना गलत नहीं है किसी के लिए, स्त्रेणपना गलत है और इसे यह पता नहीं चलता कि इसे जापानी पंप लग गया।

सारा जीवन घूमे जा रहा कुछ ऐसे बेवकूफ हैं जो है तो फुटबाल पर पत्थर के भाव कि पत्नी अकल की बात समझाए उसने वो भी नहीं सुननी, मां अकल की समझाए वो भी नहीं सुननी, मोटा दिमाग खड़ दिमाग जिसको कहते न वो ऐसे हैं।

हे प्रेमी! जो समचित्त है वो न मां के कहे का असर करता न पत्नी का वो देखता ठीक क्या है। तो यदि तुममें से कोई ठीक हो जितना ठीक-2 हिस्सा है उस हिस्से के अनुसार भक्ति में उतर फिर देख क्या नजारा है। फिर हम किसी तीसरे का प्रभाव नहीं लेते जब तक किसी तीसरे का प्रभाव लेते हैं तो **हे प्रेमी! भक्ति नहीं होती तो बातें होती हैं इसने जैसे कह दिया वैसे हो लिये,इधर से किसी ने कह दिया उधर को हो लिए सारा जीवन किसी के नचाए नाचते हैं, अपना भाव नहीं। जो अपने भाव का स्थिर है वो भजन भक्ति का पक्का है** उसको यह सवाल नहीं है कि पत्नी भजन पर बैठी कि नहीं उसने स्वयं तो बैठना है पत्नी को समझाना है कि कर पर यह नहीं कि उसको समझाते-2 अपना समय गंवा देना। ऐसे-ऐसे ''महांपुरूष'' हैं वो समझाने लगेंगे तो अपना समय गंवा देंगे फिर समझाते ही रहेंगे क्योंकि वो समझाने में उसका इतना चसका लेते हैं कि चलो शुक्र है भजन पर बैठने का समय तो टला वो टाईम पास करते हैं तो हे प्रेमी! किसी तरीके से टाईम पास मत करना तुम यहां किसी के प्रति जिम्मेदार नहीं सबसे पहली जिम्मेवारी अपने प्रति है अपना ज्यादा से ज्यादा समय भजन में दे। उसके बाद समझाने का समय है और समझाना भी कैसे? जैसे सरकारी स्कूल का अध्यापक है प्राईवेट तो नहीं कह सकता सरकारी स्कूल वाले उनको पता तनख्वाह तो आनी है तुमने पढ़ना पढ़ो न पढ़ना न पढ़ो इसलिए तो बेचारी जो सरकारी स्कूल की लेडी टीचर थी वो स्वैटर बहुत बुनती थी आज कल तो पता नहीं। मैंने खुद तो देखी हुई है आज कल नहीं पता क्या करती हैं कोई नई चीज़ चली होगी तो उन दिनों में स्वैटर बड़े चलते थे तो गालियां भी निकालती थी वो मरजाणिया ऐसे-ऐसे कई कुछ कर लेती थी। कहती पढ़ना तो पढ़ो हमें तो तनख्वाह आ जानी है। हे प्रेमी! तुम भी ऐसे ही समझाना। पत्नी को, बच्चों को भजन के लिए कहता हूं। बाकी संसारिक काम कैसे करो मैं नहीं कहता भजन के लिए ऐसे समझाना कि अपने कल्याण के लिए तुझे उठना है कर पर यह नहीं कि डंडा लेकर इतना पीछे पड़ जाए कि अपना समय गंवा दे। होगा उससे क्या 2-3 दिन बाद तेरी भी बैठक खत्म हो जाएगी।

अपनी बैठक का दृढ़ हो बस। अपना गुरू आप बन यहां कोई गुरू नहीं अपना गुरू पहले आप बन हम अपने आप को समझा लें इससे बड़ी दुनिया में भक्ति नहीं। **किसी को समझाने चल पड़े अपना छोड़ बैठे तो हे प्रेमी! वो काहे का समझाना इसलिए प्रयास जीवन में यही रखना कि अपने गुरू हम स्वयं बनें अपना मार्ग हम स्वयं शोधन करें यहां हमारा कल्याण हमारे बिना कोई नहीं कर सकता।** ***तूं अपना कल्याण आप तो कर सकता है, कोई तांत्रिक बाबा, साधू, पीर कोई न न।*** कोई कितनी भी गारन्टी ले कोई किसी का नहीं हे प्रेमी! यहां तो अपने गुरू हम आप हैं।

अपना किया आप ही पावे,प्रारब्ध फिर नाम धरावे।

हम जो बोएंगे हम काटेंगे। मिर्ची है— सन्यासी खाए कि गृहस्थी खाए वो तो जीभ को जलाएगी उसको क्या लेना तू साधू है, संत है, फकीर है उसको नहीं मतलब। मिश्री ने मिठास देनी उसको कोई मतलब नहीं तू कौन है। नमक ने नमकीन मुंह करना उसको कोई लेना-देना नहीं तू कौन है। इसलिए हे

प्रेमी! **यहां तो जिस-जिस का जो प्रभाव है उसने प्रभाव देना। ऐसे ही भजन है उसने अपना प्रभाव देना उसको सवाल नहीं तूं किस जाति का है, किस मजहब का है, किस पंथ का है उसने तो असर दिखाना पर यदि करेगा ना ही करे सारा जीवन ऐसे ही गवा दे तो हे प्रेमी! हाथ पल्ले कुछ नहीं पड़ेगा।** सो इसलिए पुराने बीते समय का भजन मत करना कि हम तो पहले बहुत कर लेते थे। अब होता नहीं अब ऐसे नहीं अब वैसे नहीं।

कोशिश यह करना जैसे भी हो ज्यादा से ज्यादा समय बैठक में जाए। दूसरी चीज़ सत्संग का जितना अधिक से अधिक हो सके उतना पक्का बन क्योंकि यह ऐसे नहीं है कि कभी साल में एकाध बार ही याद आ गई। दस साल में एकाध बार याद आ गई तो कुछ कर लिया नहीं हो तो फिर मस्त हैं सोये हैं। ऐसे नहीं। कोशिश यह कर जितना अधिक से अधिक समय बने उतना अधिक से अधिक लाभ ले क्योंकि हे प्रेमी! बुद्धि खुलते-2 देर लगती है और सत्संग ऐसी चीज़ है अभी हल्का सा कुसंग मिला सत्संगत जाती रहेगी। यह तो बहुत कर-करके इसका प्रभाव टिकता है।

कभी आपने एक चीज़ आयुर्वेद की भाषा में यदि सुनी हो जो आर्युवेद की प्रवल उच्च कोटि की दबाईयां हैं उनका सबसे पहला विधान होता कि उनको टाईट करके बंद करके रखो नहीं तो जैसे ही ढक्कन हल्का सा खुला रहेगा उसका असर जाता रहेगा। Material बीच में ही है पर असर नहीं है। हे प्रेमी! कुछ ऐसा ही महांपुरूषों ने परमात्मा के नाम को उसकी संगत को कहा कि संगत बहुत करने के बावजूद भी संभल जाए यह मुश्किल बात कुसंग हल्का सा भी मिल जाए उसी समय सारा माहौल बदल जाता। दहीं हो उसमें चाहे दस-बीस-पच्चास बूंदें भी दूध की पड़ जाएं तो संभवत: वह दहीं हो जाएंगी पर एक क्विंटल भर दूध में आधी बूंद दहीं की चली जाए पूरा ही दहीं हो जाएगा क्योंकि कुसंग अपना रंग जल्दी दिखाता कुसंगी आदमी जबरदस्ती गले पड़ता। सत्संगी वो बचेगा वो कोशिश करेगा चुप रहूं मौन रहूं। कुसंगी आदमी इतने तरीके-2 से समझाएगा सुनाएगा कि तुझे ले डूबेगा बस। इसलिए कभी भी ध्यान रखना कहीं आओ जाओ रिशतेदार घर बैठक कहीं भी सबसे पहला ध्यान रखना या तो मौन रह, चुप रह। यदि बोलना पड़े तो सिर्फ परमात्मा की चर्चा कर

जां बोले तां ब्रह्मज्ञान एहि निश लागा रहे ध्यान

जां बोले अर्थात यदि चर्चा करे तो परमात्मा की ब्रह्मज्ञान की एहि निश लागा रहे ध्यान कि नहीं तो दिन रात उसके ध्यान में ही रह इसलिए जब उस व्यक्ति ने पूछा था किसान को कि क्या जो मैंने बोला तूने सुना कहता नहीं। क्यों? कहता भई मैं अपने ध्यान में हूं। कहता मेरा ध्यान अपने आपे में स्थित है तेरी बातों में नहीं। हे प्रेमी! किसी की बात को कान देने की जरूरत नहीं तूं सिर्फ अपना ध्यान अपने आपे में रख। यहां बहुत कुछ है जो देखकर भी समझ में नहीं आता और बहुत कुछ ऐसा है जो ना चाहते हुए भी बुद्धि में घर कर जाता इसलिए हर चीज़ से बचने का माध्यम है सत्संग। कोई बात कुछ विचार आ जाए उसको सत्संग से समझ सत्संग से उसको काट, जो रखने योग्य है उसको धारण कर बाकी उड़ा दे।

महांपुरूषों ने हंस की उदाहरण ली हंस के आगे यदि दूध और पानी मिलाकर रख दिया जाए तो ज्यों ही हंस की चोंच उसमें लगती है वो दूध फट जाता, पानी अलग हो जाता। उस दूध में भी जो भारी पन होगा वो छिछड़े से बन जाएंगे हंस उसको चुन लेता बस बाकी पानी नहीं पीता वो। अब उसकी चोंच में

गुण है यह तो संसारिक मिसाल हो गई लेकिन ज्ञानवान, भजन-भक्ति का पक्का आदमी उसके जीवन में यह रस है कि ज्यों ही गलत औऱ ठीक Mix होकर उसके सामने आया उसने ठीक चुन लेना गलत को हटा देना इसको कहते सत्त असत्त का निर्णय अर्थात सत्त जो ठीक है, उचित है, सत्संग का, कल्याण का मार्ग देने वाला है उसको ग्रहण करना बाकी को हटा देना। हे प्रेमी! यदि जीवन में भजन भक्ति का अभ्यास है यह चीज़ तो आगे बड़ती। नहीं हो तो इससे लाभ नहीं होता।

तत् सत् हरि् ओम्

ਕਿੱਸਾ ਪੂਰਨ ਭਗਤ

(ਨਿਕਲਨਾ ਪੂਰਨ ਦਾ ਭੋਰੇ ਵਿੱਚੋਂ ਅਤੇ ਦਰਸ਼ਨ ਕਰਨਾ ਪਿਤਾ ਦਾ)

ਬਾਰਹਾਂ ਬਰਸ ਜਦੋਂ ਪੂਰੇ ਆਣ ਹੋਏ, ਰਾਜੇ ਹੁਕਮ ਦਿੱਤਾ ਪੂਰਨ ਲਿਵਾਵਣੇ ਨੂੰ।
ਕੱਢ ਨੌਕਰਾਂ ਭੋਰਿਆਂ ਬਾਹਰ ਆਂਦਾ, ਆਇਆ ਪਿਤਾ ਦੇ ਸੀਸ ਨਿਵਾਵਣੇ ਨੂੰ।
ਜਖਮ ਹਿਜਰ ਵਾਲਾ ਗਿਆ ਜਿਗਰ ਉੱਤੋਂ, ਮਰਹਮ ਵਸਲ ਵਾਲੀ ਮਿਲੀ ਲਾਵਣੇ ਨੂੰ।
ਲੱਗੀ ਅੱਗ ਵਿਛੋੜੇ ਦੀ ਦੂਰ ਹੋਈ, ਆਇਆ ਠੰਡ ਵਿੱਚ ਛਾਤੀ ਪਾਵਣੇ ਨੂੰ।
ਸਾਰੇ ਸਾਜ ਸਮਾਜ ਦਾ ਕੱਠ ਹੋਇਆ, ਖੁਸ਼ੀ ਐਸੀ ਥੀ ਜਿਉ ਪਰਚਾਵਣੇ ਨੂੰ।
ਰਾਜਾ ਆਤਮਾ ਵਾਂਗ ਅਡੋਲ ਹੋਕੇ, ਬੈਠਾ ਤਖਤ ਤੇ ਹੁਕੱਮ ਚਲਾਵਣੇ ਨੂੰ।
ਖਲੀ ਫੌਜ ਪਚੀਸ ਪਰ ਕਿਰਤੀਆਂ ਦੀ ਲਗੀ ਪ੍ਰੇਮ ਨਿਸ਼ਾਨ ਝੁਲਾਵਣੇ ਨੂੰ।
ਅਫਸਰ ਕੱਸ ਕਮਰਾਂ ਅੰਤ ਕਰਣ ਚਾਰੇ, ਲੱਗੇ ਖੂਬ ਕਵਾਮਦ ਕਰਾਵਣੇ ਨੂੰ।
ਲੰਗਾ ਹੋਵਾ ਤਮਾਸ਼ੜਾ ਜਗਤਰੂਪੀ ਲਗੇ ਨੌਬਤਾ ਢੋਲ ਖੜਕਾਵਣੇ ਨੂੰ।
ਮਨ ਨੱਚਦਾ ਵਾਂਗ ਮਦਾਰੀਆਂ ਦੇ, ਇਦ੍ ਜਾਲ ਦੀ ਖੇਡ ਦਿਖਾਵਣੇ ਨੂੰ।
ਖੋਲ ਛਡਿੱਆ ਨਵਾਂ ਦਵਾਰਿਆਂ ਨੂੰ, ਰਾਜੇ ਤੱਕ ਕੇ ਖਲਕ ਦੇ ਆਵਣੇ ਨੂੰ।
ਦਸਵਾਂ ਦੁਆਰ ਪ੍ਰਾਣ ਪਿਆਰਿਆਂ ਨੂੰ, ਅਹਲਕਾਰ ਸਭ ਅਗਹਾਂ ਲੰਘਾਵਣੇ ਨੂੰ।
ਦਸੋ ਦਸਾਂ ਬਨਾਈਆਂ ਸਭ ਸੜਕਾਂ, ਦੇਹੀ ਰੱਬ ਦੀ ਜਾਗ ਦੁੜਾਵਣੇ ਨੂੰ।
ਕਾਮ ਕ੍ਰੋਧ ਹੰਕਾਰ ਮੋਹ ਸੱਦ ਲਏ ਚੂਹੜੇ ਜਗਾ ਦੇ ਸਾਫ ਕਰਾਵਣੇ ਨੂੰ।
ਬਾਜੀਗਰਾਂ ਦਾ ਰੂਪ ਦਲੀਲ ਉਠੀ, ਵਾਂਗੂੰ ਨਟਾਂ ਦੇ ਬਾਜੀਆਂ ਲਾਵਣੇ ਨੂੰ।
ਸਾਲਕ ਆਏ ਨੇ ਇਸ਼ਕ ਦੀ ਚਿਣਗ ਘੱਤਣ, ਆਤਸ਼ਬਾਜ ਅਨਾਰ ਛੁਠਾਵਣੇ ਨੂੰ।
ਪੰਜੇ ਤੱਤ ਰੱਬਾਬੀਆਂ ਵਾਂਗ ਆਏ ਬੈਠੇ ਅਨਹਦ ਸਾਜ ਸੁਨਾਵਣੇ ਨੂੰ।
ਤਿੰਨੇ ਦੇਵਤਾ ਤਿੰਨ ਗ੍ਰਾਮ ਹੋਏ, ਸੱਪਤ ਗੁਰਾਂ ਦਾ ਭੇਦ ਬਤਾਵਣੇ ਨੂੰ।
ਢੋਲਕ ਸਾਰੰਗੀ ਤੂਸ ਮਰਦੰਗ ਮੱਧਮ, ਤਰ੍ਹਾਂ-ਤਰ੍ਹਾਂ ਦੇ ਸਾਜ ਬਸਾਵਣੇ ਨੂੰ।
ਚਾਰੇ ਜੁਗ ਹੋ ਸਾਮਨੇ ਖੜੇ ਰਾਗੀ, ਲਗੇ ਗੀਤ ਗੋਬਿੰਦ ਦੇ ਗਾਵਣੇ ਨੂੰ।
ਮਨ ਸਦਿੱਆ ਵਾਸ਼ਨਾ ਕੰਜਰੀ ਨੂੰ, ਆਈ ਚਿੱਤ ਦੀ ਬਿਰਤੀ ਨਚਾਵਣੇ ਨੂੰ।
ਇਸ਼ਕ ਹੱਕ ਤੇ ਖੁਦੀ ਦਾ ਨਸ਼ਾ ਲੈਕੇ, ਸਾਕੀ ਬੈਠਾ ਏ ਜਾਮ ਪਿਲਾਵਣੇ ਨੂੰ।

ਦਸੇ ਇੰਦ੍ ਗੋਪੀਆਂ ਕਰਨ ਲੀਲਾ, ਕ੍ਰਿਸ਼ਣ ਆਤਮਾ ਚੀਰ ਲੁਹਾਵਣੇ ਨੂੰ।
ਹਰ ਇਕ ਬਸ਼ਰ ਨਿਚ ਬੰਸਰੀ ਸ਼ਬਦ ਰੂਪੀ, ਨੰਦ ਲਾਲ ਨੇ ਧਰੀ ਬਜਾਵਣੇ ਨੂੰ।
ਭੋਜਨ ਰਖਦੇ ਭਗਤ ਤਿਆਰ ਕਰਕੇ, ਗੰਗਾ ਖਲੀ ਏ ਹੱਥ ਧੁਲਾਵਣੇ ਨੂੰ।
ਕੱਠੇ ਹੋਈ ਕੇ ਵਿਚ ਅਕਾਸ਼ ਮਾਰਗ, ਲਗੇ ਦੇਵਤਾ ਫੁੱਲ ਬਰਸਾਵਣੇ ਨੂੰ।
ਅਸ਼ਟ ਸਿੱਧ ਨੌ ਨਿੱਧੀਆਂ ਕਲਾਂ ਸੋਲਾਂ, ਆਈਆਂ ਗੋਲੀਆਂ ਟਹਲ ਕਮਾਵਣੇ ਨੂੰ।
ਰਾਣੀ ਜਾਗਰਤ ਸੁਫਨ ਸਖੋਪਤਿ ਜੀ, ਤੁਰੀਆ ਸੁਖਾਂ ਦੀ ਸੇਜ ਵਛਾਵਣੇ ਨੂੰ।
ਚਾਹ ਚੂਹੜੀ ਅੱਡ ਕੇ ਖਾਲੀ ਝੋਲੀ, ਦਯਾ ਉਠ ਬੈਠੀ ਭੀਖ ਪਾਵਣੇ ਨੂੰ।
ਲੋਭ ਚਿੱਤ ਦਾ ਕੋਲ ਕੰਗਾਲ ਵਾਧਾ, ਮੂਹੋਂ ਮੰਗਦਾ ਏ ਕੁਝ ਖਾਵਣੇ ਨੂੰ।
ਸਪਤ ਦੀਪ ਨੌ ਖੰਡ ਚ ਭਵਨ ਚੌਦਾਂ, ਦੀਨ ਦੁਨੀ ਦਾ ਜਸ ਵਧਾਵਣੇ ਨੂੰ।
ਜੰਮਣ ਮਰਨ ਜਹਾਨ ਦਾ ਜੇਲ੍ਹਖਾਨਾ, ਕਰਮ ਅੜਦਲੀ ਜੂਨ ਭੁਗਾਵਣੇ ਨੂੰ।
ਰਾਜਾ ਖੁਸ਼ੀ ਥੀਂ ਦੱਦਡੱਡਦਾ ਕੈਦੀਆਂ ਨੂੰ, ਤੋਬਾ ਫੜਨ ਜੇ ਭੁਲ ਬਖਸ਼ਾਵਣੇ ਨੂੰ।
ਚਾਰੇ ਵੇਦ ਦਾ ਸਮਝ ਵਜੀਰ ਚਾਰੇ, ਖਲੋ ਪੁੰਨ ਤੇ ਪਾਪ ਸਮਝਾਵਣੇ ਨੂੰ।
ਗਿਆਨ ਗੁਰੂ ਦਾ ਮਿਸਲ ਚਰਾਗ ਹੈ ਜੀ, ਕਾਇਆ ਕੋਠੜੀ ਵਿੱਚ ਜਗਾਵਣੇ ਨੂੰ।
ਰਾਨੀ ਇੱਛਰਾਂ ਹੋ ਗਈ ਰੂਪ ਮਾਇਆ, ਜਗਤ ਜਾਲ ਦੀ ਖੇਡ ਰਚਾਵਣੇ ਨੂੰ।
ਦਿਨ ਤੇ ਰਾਤ ਬਨ ਗਏ ਦਾਈ ਦਾਇਆ, ਕੁੱਛੜ ਚੁਕ ਕੇ ਬਾਲ ਖਡਾਵਣੇ ਨੂੰ।
ਪੂਰਨ ਪੁੱਤ ਡਿੱਠਾ ਬਾਪ ਪਰਿਪੂਰਣ, ਪਕੜ ਲਿਆ ਏ ਗੋਦ ਬਿਠਾਵਣੇ ਨੂੰ।
ਕਾਲੀਦਾਸ ਡਿੱਠਾ ਹੋਈ ਖੁਸ਼ੀ ਏਕਤਾ ਦੀ, ਦੂਜਾ ਰਿਹਾ ਨ ਦੂਈ ਉਠਾਵਣੇ ਨੂੰ।

H.O.R.S.E हार्स माने 'गोरा' जो घास खाता है

द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान कुछ अंग्रेजी तथा अमरीकी सिपाही दिल्ली में आनंद पर्वत और उस के आस-पास बनी बैरकों में रहते थे। उनमें से कुछ सैनिक अधिकारियों की हिंदुस्तानी सीखने की इच्छा थी, अत: अंग्रजी सरकार की और से इस सेवा के लिए कुछ शिक्षकों को नियुक्त किया गया। उनमें से एक शिक्षक ने अपना अनुभव सुनाते हुए बताया—

''एक नौजवान सेना अधिकारी को हिंदुस्तानी पढ़ाना मेरे जिम्मे था। उसे अंग्रजी के माध्यम से पढ़ाना पड़ता था। मैंने उसे पढ़ाया— एच.ओ.आर.एस.ई, हार्स माने घोड़ा। लेकिन उसके लिए 'घ' और 'ड़ा' का उच्चारण असंभव था।

अत: वह पढ़ता—'हार्स, माने गोरा।' मैंने उसे समझाया कि 'गोरा' तो उसको कहा जाता है जो कैम्प में रहता है, किंतु घोड़ा उसे कहते हैं, जो घास खाता है। बहुत परिश्रम करने पर भी वह घोड़ा नहीं बोल सका, तो उसने पढ़ना आरंभ कर दिया H.O.R.S.E हार्स माने 'गोरा' वह गोरा नहीं, जो कैम्प में रहता है, वह गोरा जो घास खाता है।''

दुशहरा के सुअवसर पर हुए प्रवचन जो तत्क्षण नोट कर लिए गए

गताङ्क से आगे.....

यदि पलट जाएगा तो सृष्टि पर एक बहुत बड़े विद्वान का जन्म होगा क्योंकि यह राक्षसों में होते हुए भी इसके जैसा कोई पूजनीय नहीं इतना उच्च कोटि का विद्वान पर रावण को अंतिम समय तक समझ नहीं आई। बहुत तरीके से श्री राम जी ने धीरे-2 करके युक्ति लड़ाई। कभी हनुमान जी को भेजा, कभी अंगद को भेजा, कभी कोई कभी कोई कुछ न कुछ कुछ न कुछ किये गये कि इसको अकल आ जाए पर बस की बात नहीं तो जब युद्ध हो गया अन्तिम जो तीर लगना था वो भी लग गया अब भूमी पर रावण अधमरा सा पड़ा है। श्री राम जी ने फिर भेजा कहते कि लक्ष्मण अब जाओ अब जाकर इससे कुछ शिक्षा लेकर आओ। लक्ष्मण कहता जी इससे शिक्षा क्या लेनी क्योंकि इसकी शिक्षा यही होगी कि लूटो, खसूटो, मारो, काटो बस क्योंकि किया ही इसने यह कुछ है। तो श्री राम जी ने तब एक बहुत उच्च वाक्य कहा था तकरीबन-2 दुनियां में हमने वो भुला रखा पता सबको है भुला भी रखा और याद भी आ जाए तो प्रयोग में लेते नहीं वो वाक्य क्या था। श्री राम जी ने कहा कहते लक्ष्मण यदि ऊंचे उठना हो तो उसके लिए हमेशा जीवन में याद रखना कि जिसके पास कुछ अच्छा है ले लो जो मिल सकता ले लो पर उसकी बुराई को कभी मत देखना, देखना भी मत क्योंकि तूने ऊंचे उठना तूं रावण से ले ले यदि कुछ मिलता।

'मुल्ला सबक न दे तो घर भी न जाने देगा'

यह तो होगा ही नहीं। नहीं रावण बताएगा तो लौट आना पर इससे सीख। यह मत देख कि यह राक्षस है, यह मत देख कि इसने सीता का अपहरण किया, यह मत देख कि इसने जुल्म किये उसके कर्मों को तू मत गिनना। कर्मों को एक तरफ रख क्योंकि कर्म के ऊपर किसी का बस नहीं ऐसे समझ। उसके गल्त कर्मों को एक तरफ रख जो उसके पास अपना है सो ले ले तो लक्ष्मण गये जाकर रावण तो पड़ा है उसके सिर के पीछे जाकर कहते रावण बता दे कुछ फिर यह तो ऐसे हो गया जैसे मरे पड़े आदमी से उसका Password पूछो कि दे दे बता दे क्या है। रावण चुप रहा। कुछ नहीं बोला तो लक्ष्मण आकर कहते प्रभु उसने कुछ नहीं बताना क्योंकि पूरे जीवन का अहंकारी है वो तो बोलता भी नहीं। श्री राम जी कहते कि लक्ष्मण शिक्षा लेने के कुछ नियम हैं कुछ भी दुनिया में प्राप्त करना हो तो उसके कुछ नियम हैं।

सबसे पहला नियम है झुकना यदि झुको नहीं तो मिलता नहीं नदी भरपूर बह रही उससे तब तक लाभ नहीं लिया जा सकता जब तक झुककर न ले ले झुकना तो पड़ेगा। तूं जाकर सिर की तरफ खड़ा होकर आदेश देता है जबकि लेने वाले से उसके चरणों में बैठना पड़ता। जाओ जाकर चरणों की तरफ खड़ा हो फिर उस से पूछ। लक्ष्मण दोबारा गये चरणों की तरफ जाकर सादर प्रणाम किया यह नहीं कह दिया कि ओ राक्षस! दे दे। सादर प्रणाम करके फिर कहा कहते कि हे रावण! मैं आपके जीवन के आचरण को या आपके कर्मों को ध्यान में न लेते हुए एक उच्च कोटि के विद्वान से कुछ याचना करता हूं कि मुझे जीवन के नियम सिखाओ। कुछ वो चीजे बताओ जो मेरे लिए औऱ मेरे से जुड़े प्रत्येक व्यक्ति के लिए लाभदायक हों तो उस समय रावण ने कुछ विधान कुछ वो बातें बताईं जो तकरीबन-2 उस के बाद सब महांपुरूषों ने Repeat करी फिर। सभी ने ही। रावण ने कहा कहता कि देख अच्छाई का विचार आ जाए

उसको कभी कल पर मत टालना पहली नीति है। कुछ अच्छे का विचार आ जाए उसको अब कर लेना। रावण कहता मैंने बहुत कुछ सोचा। कहता मेरे मन में आया कि सोना बहुत कीमती है पर यदि सोने में सुगंध हो तो क्या ही बात पर कहता चलो देवताओं को आदेश ही देना फिर कर लेंगे रह गया। सोचा कि आग में ज्वलन तो रहे धुंआ न रहे पर कहता अग्नि देव को आदेश देना हो जाएगा। सोचा कि लोग कितने-2 तप करते हैं स्वर्ग प्राप्ति के लिए एक सीढ़ी बना दी जाए पर कहता कहना ही है विश्वकर्मा को कहेंगे, हो जाएगा। कहना कोई बड़ी बात नहीं पर वो भी फिर हो जाएगा सोचा कि **यदि मां से पहले पुत्र मरे तो मां को दुख होता तो काल को आदेश देना कि कभी जब तक मां हो उसके पुत्र न मरें पर सोचा कहना ही है हो जाएगा फिर कर लेंगे।** जो-2 विचार आये बस कहता कर लेंगे, बस कह देंगे हो जाएगा अभी कर लेंगे बस वो होते-2 कहता जो-2 अच्छे विचार आये।

अब अच्छे विचार इसलिए आए क्योंकि भीतर से संस्कार का बीज ऋषियों का है। ऋषि की संतान है, कर्म राक्षसों के हो गये इसलिए जो अच्छाई है वो रंग दिखाती है अच्छाई ऐसे रंग दिखा गई कि माता सीता को कहता कि जिस दिन तू मानेंगी तो विवाह करूंगा पर छोड़ूंगा नहीं। हाथ लगाऊंगा नहीं पर छोड़ूंगा भी नहीं रखे रखा वहां छूआ भी नहीं क्योंकि भीतर से ऋषियों का बीज है। भीतर से वो आचरण बैठा है पर कर्म राक्षसी। कर्म यह कहता कि छोड़ूंगा नहीं आजाद नहीं कर देना। तंगी तुझे कोई नहीं खाओ,पीओ मौज करो। माता सीता कहे कि लेना कुछ नहीं। हे प्रेमी अब भीतर से पवित्रता या अंश थोड़ा बहुत है इसलिए आगे के ऋषियों ने रावण को महां पंडित करके कहा, महा विद्वान करके कहा पर राक्षस की उपाधि इसलिए क्योंकि सारे कर्मों का उसने निचोड़ राक्षसपने में निकाला तो खैर रावण कहता है कि **पहली चीज़ अच्छाई का कुछ विचार आ जाए तो उसको टालना मत। लक्ष्मण कहते क्यों? तब रावण कहता कि लक्ष्मण! जब भी हम अच्छाई के विचार को टालते हैं तो दरअसल हम नहीं टालते हमारे भीतर का रावण टालता है कहता कि मुझे टालने वाला मेरा अपना रावण पन था।** जब भी मैं कुछ सोचता था तो सिर्फ इतना था अच्छा कल कर लेंगे बस कहता यह रावण पन है।

कभी आप अपने जीवन में देखो जब हम सत्संग सुनते हैं पत्रिका पढ़ें बड़े विचार आते हैं अच्छा अब से ऐसे करना, अब से यह करना, भजन पर इतनी देर बैठना ही बैठना। बड़े प्रण आयेंगे। बस जैसे ही वो खाता बंद हुआ पता नहीं कहां विचार कहां हम कहां होश। हे प्रेमी! वो क्या कि जब तक तो कुछ संगत में है तब तक राम का अंश है। ज्यों ही हटे रावण फिर जाग गया। अच्छा कर लेंगे हो ही जाएगा आज नहीं तो कल कर लेंगे। अभी तो Time ही Time है बस। हे प्रेमी! यह लपेटा है। तो रावण ने कहा लक्ष्मण टालने का अर्थ समझ लेना कि तेरे भीतर रावण जाग्रत हो गया बस अब वो करने नहीं देगा। आज को कल, कल को फिर कल उसको फिर कल और कल और कल बस कल-3 करते निकल जाएगा। दूसरी बात यह मत देखना कि सिखाने वाले की जाति, धर्म क्या है? उसका आचरण क्या है? कोई जरूरी नहीं। हे प्रेमी! लहसुन सब्जियों में डाला जाता इन दिनों में कुछ लोग ऐसे हो जो कहते हैं कि हमने लहसुन प्याज खाना ही नहीं पर किसके लिए वो इसलिए कहते हैं कि यह गर्म है। कुछ

लोग, कुछ संतजन इसे कामुक भी गिनते हैं। कोई इसे राक्षसी आहार भी गिनते हैं वो सबने अपने-2 मत बना रखे पर **किसी को प्रबल उच्च दर्जे की वात की शिकायत हो जाए वात रोग हो जाए शरीर जुड़ जाए फिर सब भूल जाता कि कौन से नवरात्रे हैं, कौन से दुशहरे, दीवालियां फिर सब भूल जाता क्या धर्म है** तब कहते कि लहसुन का पानी लगाओ लहसुन उसे सुबह शाम खाने को दो उसके पानी को गर्म करके मालिश करो ढाई दिन में पूरे Complete ढाई में वात का रोग खत्म हो जाता।

हे प्रेमी! तब सारे धर्म मिट्टी हो जाते क्योंकि सवाल है तब अपने शरीर पर नौबत आ गई फिर नहीं दिखते धर्म फिर सब मर्यादाएं मिट्टी तो यह सवाल क्या तो रावण कहता कि कभी जाति को मत देखना कि यह कैसा है। उसका जो गुण है ग्रहण करना। कहता मैंने अपनी जाति को, राक्षस जाति को एक तरफ रख के सब देवों के जो कर्म थे यज्ञ, अनुष्ठान, तंत्र मैंने सब कुछ कहता ग्रहण किया, मैंने नहीं यह कहा कि मैं तो राक्षस हूं मैं ना लूं पिता थे विश्रवा ऋषि उन्होंने कहा कि तुझे सात्विक रहकर, पवित्र रहकर इस-2 प्रकार से भगवान शंकर की आराधना करनी कहता मैंने करी इसलिए कहता मैंने अपनी जाति को एक तरफ रखा और जब मुझे किसी ने सिखाया तो मैंने उस सिखाने वाले को भी महत्व दिया यह भी नहीं कहा कि सिखाने वाला मेरी जाति का नहीं और हे प्रेमी! यह दुनियां में इस समय की सबसे बड़ी मार है पूरी दुनिया में इस समय यह मार है। तू किसी भी चीज़ को राशन कार्ड के मुताबिक पहले बांटते हो कि यह मजहबी यह सनातनी यह धर्मपंथी, ज्ञानपंथी पता नहीं कहां से कहां। सबसे पहले बांटते हो उसके बाद बांटे हुए को देखते हो। यह बांट दुनियावी कार्यों में तो चल सकती परमात्मा के भजन में नहीं चलेगी। न कभी चली थी न आज चल सकती न आगे चलेगी बांट का तो किसी प्रकार सवाल ही नहीं यह संभव ही नहीं कि ऐसे हो जाए तो खैर ऐसे करके जो रावण ने शिक्षाएं दी। एकाध नहीं लम्बी फहरिस्त है। कई कुछ समझाया। समझाकर अंत में एक बात कही। कहते कि लक्ष्मण यदि मैं चाहता तो मेरे बचने के बहुत से उपाय अब भी संभव थे पर **कहता सवाल वही है कि मेरे कर्म ही इतने बुरे थे कि राम को तो सिर्फ निमित्त बनना पड़ा मुझे तो मेरी मैं ने ही मार दिया।** यह अन्तिम संदेश था। न भी राम आते तो सम्भवत: किसी का पत्थर लगता तो ही कुछ हो जाता क्योंकि कर्म ही इतने कर रखे कि बोझ ही बोझ है। जब लड़ाई का समय था पत्नी समझाती है कि राम परमात्म स्वरूप हैं तूं मत उनसे उलझ, तूं नमस्कार कर, क्षमा याचना कर आगे बढ़। तो रावण कहता क्यों? क्यों करें क्षमा याचना जिससे कहता अपनी स्त्री न संभाली गयी। वो काहे का परमात्मा अब हे प्रेमी! दुनियावी तर्क तो बिलकुल ठीक पर अंदरूनी अध्यात्मिक स्तर पर देखोगे तो नहीं अब यह कहें कि संभाली नहीं गई वहां तैयारी करके छोड़ी गई। चारा डाला गया किसी को पकड़ने के लिए वहां तो यह है।

जबकि श्री राम जी ने यह पहले ही तैयारी करवा रखी परन्तु इस बात को स्वीकार रावण ने अंत में चलकर किया जब गिर गया तो लक्ष्मण को कहा कि समझते हुए भी मैं नासमझ बना रहा मुझे कहता हर क्षण अनुभव होता था कि यह जो मैं कुछ करता हूं यह मेरी अंतिम यात्रा की तैयारी है पर हे प्रेमी! अब एकाध जन्म का खेल नहीं। पिछले जन्मों से देखो वही था राजा उदयभानु प्रतापभानु जो आगे रावण और कुम्भकर्ण थे। उस जन्म में पवित्रता पूर्वक जीते-2 आगे जब कुछ गल्ती हुई तो आगे राक्षस

योनि में आना पड़ा। अब राक्षस योनि में खुद तो राजा है जो बाकी छोटे-2 और पापी हैं वो बेचारे राक्षस बने हैं पर रावण ने यह नहीं किया कि पहले युद्ध में चला गया। जो-2 थे रिश्तेदार सब भेजे। कोई मामा, कोई चाचा, ताये जो भी रिश्तेदार कहीं भुमि गत थे सब। सारे निकाल कर भेजे निकाल कर मरवा दिये। पुत्र भी मरवा दिया।

पत्नी कहती कि तूं अपना सारा कुन्वा खत्म करेगा। तो आगे से रावण का जबाव कहता रावण हूं कोई ऐसे थोड़े ही। जीतूंगा राम को अंत में। अब हे प्रेमी! दूसरी तरफ से Science क्या है कि जब समग्र को साफ करवा दिया तो अंत में चलकर आप भी मर गया। अब न रहे बांस न बजे बांसुरी पीछे संतान का सवाल ही नहीं क्योंकि समग्र जो था एहि रावण, महि रावण उनका आह्वान करके उनको बुलाया कि ठीक है तुम भी जाओ और कोई इधर उधर के भाई, चाचे रिश्तेदार सब सारे मरवा दिये। जब देखा अंत में रह गया स्वयं तो आप भी चल गया। हे प्रेमी! तकरीबन-2 इस कहानी में से मैं एक चीज लेता हूं। एकाध दिन पूतला फूंका आग लगाई पटाके चले यह तो हो गया मनोरंजन मजा आ गया खुशी हो गयी पर **तकरीबन-2 रावण मरता नहीं और जितने ज्यादा इसके पुतले जलते हैं यह उतना प्रबल होता।** क्यों? क्योंकि एक तो वो आदमी है जिसको तुम भुला दो उसको याद न रखो जिसका भजन न करो वो तो तुम्हें थोड़ी देर में मिट्टी हो जाएगा। नज़र नहीं आएगा। रावण वो है जिसे तहे दिल से दशहरे के दिन याद किया जाता। तहे दिल से हर आदमी इसका तसल्ली से भजन करता कि इस दिन रावण मरा था। रावण जलाना है। पूरा भजन करते। कई तो बेचारे पूरा-2 साल उसकी तैयारी करते। तसल्ली से श्रद्धा से उसे याद किया जाता इसलिए हे प्रेमी! रावण कभी जलता नहीं जितना जलाने का प्रयास किया जाता रावण उतना ही हरा हो जाता। यह तो है बाहरी। अब अंदर से इस बात को समझ रावण सही अर्थों में है क्या?

किसी आदमी ने एक बात कही थी कहता कि मैं नहीं मानता कि रामायण जैसी कोई चीज़ हुई थी कोई घटना घटी थी। या रावण, राम, हनुमान यह लोग हुए थे मैं नहीं मानता। ऐसे बहुत से लोग आज हो सकते हैं मिल सकते हैं। **हे प्रेमी! बात इतनी है दुनिया में तुम जितनी भी कहानियां सुनते हो मान लेते हैं कि वो सौ की सौ प्रतिशत झूठ हैं पर संदेश कभी झूठ नहीं हो सकता।** संदेश सिर्फ इतना है कि तुम कितना भी बुरा कर लो। पर जब शरीर छूटता है तो न्याय हो जाता। कहानी को झुठलाया जा सकता। संदेश को झुठलाया नहीं जा सकता और कहानी बनी इस आधार पर है कि इसमें एक-एक पल में लाखों सन्देश हैं पर ले कौन सकता।

रावण का संदेश यह था कि कभी भी जाति के आधार पर अध्यात्म को बांटा नहीं जा सकता। अब हे प्रेमी! जो जाति के आधार पर बांटना चाहेगा उसको क्या अध्यात्म की समझ आएगी? नहीं। कभी आ सकती भी नहीं क्योंकि जिसने जाति के आधार पर परमात्मा को कांट छांट करनी हो उसे तो कभी सवाल ही नहीं कि कभी परमात्मा की समझ जाग जाए। परमात्मा की समझ उसे जागती जिसने इन चीज़ो को माध्यम बनाकर ऊंचा उठना। जिसने बजाय माध्यम बनाने के इसी को तर्क से काटे जाना हे प्रेमी! यह वो हालत है कूंए में कोई तार्किक गिर जाए। चढ़ने का, निकलने का रास्ता न हो। तुम उसके लिए बीच में कोई रस्सी कोई बडा रस्सा बीच में फैंक दो बजाय बाहर निकलने के वो अपनी तर्क से उस रस्से को कुतरेगा कि मैं नहीं मानता कि

यह रस्सा मजबूत है, मैं नहीं मानता कि यह बाहर निकाल सकेगा कि नहीं। तो हे प्रेमी! उसके लिए कुछ मर्जी कर लो वो बीच में मरेगा। तकरीबन-2 जो इस दुनिया में कहते हैं कि मैं यह मानता मैं वो नहीं मानता हालत उनकी ऐसी ही है और ऐसी तो स्वयं होगी ही। तुम किसी धर्म की बात ले लो किसी मजहब की बात ले लो, किसी सम्प्रदाय की बात ले लो उसमें अंतत: चलकर कुछ निर्देश, कुछ संदेश हैं। उन संदेशों को आज किसी भी ढंग से झुठलाया जाए हे प्रेमी! झुठलाया तो जा सकता ही है क्योंकि आज जो तुम्हारा समय है इस समय में Video हैं, Photo हैं उस समय के प्रमाण ऐसे नहीं परन्तु प्राकृतिक हैं अब प्राकृतिक प्रमाण तुम्हें इसलिए समझ नहीं आते क्योंकि तुम अप्रकृतिक में ज्यादा जीते हो। तुम उस पर विश्वास करते हो। जिसे तुमने बनाया इसिलिए बने हुए पर तुम्हें विश्वास नहीं।

जैसे जब तक Google Map जो एक Service है यह जब तक नहीं बनी थी तब तक रामायण का जो पुल है राम सेतु उसे लोग मानते नहीं थे। अमेरिका वालों ने झुठला दिया और सबने कह दिया कि यह हो ही नहीं सकता कि समुंद्र के ऊपर पत्थरों से पुल बन जाए। यह मान नहीं सकते। फिर Satellite बने नई-2 तकनीक आई विकास हुआ Google Map जो Service है वो भी बनी। **जब वहां राम सेतु की एक हल्की सी लाईन नज़र आई तो उसे एक राम सेतू को ही देखने के लिए अच्छे से अच्छे Satellite दोबारा भेजे गये।** जब और Zoom करके मोटा करके उसको देखा तो पाया क्या कि बाकायदा लंका तक एक पुल बना हुआ है। आज भी उसकी तस्वीरें Google Map के ऊपर देखी जा सकती तो अमेरिका वालों ने Research शुरू करी पहले यह कह दिया कि हम नहीं मानते। यह हो सकता ही नहीं। फिर कहते हां हो सकता है। फिर कहते कि दोनों सरकारों से Permission लो। भारत और लंका से कि इसको खोदकर देखा जाए कि है क्या? अब लंका वालों की तो क्या Permission बेचारों की, भारत वाले पहले ही कहते कि नहीं-2 यह नहीं हम अपने धर्म के साथ छेड़छाड़ नहीं करेंगे तो ये तो ऐसे बंध गये। तो हे प्रेमी! सवाल यह है कि प्रमाण है तो परन्तु प्राकृतिक क्योंकि आज का विज्ञान केवल और केवल इस बात पर विश्वास करता कि Bomb ऐसे हो सकते हैं Missile हो सकती हैं जिन्हें चलाने से वह दूसरी जगह पहुंच कर वो प्रहार करेंगी। तब की Science कुछ ऐसी थी तुम यहां से कुछ शब्द बोलते हो वो निश्चित जगह पर जाकर व्यक्ति को प्रभावित करते हैं, उसे कहते थे मंत्र। मंत्रों का कुछ और ज्यादा लम्बा काम नहीं मंत्रों की Science यह सिर्फ और सिर्फ शब्दों का विज्ञान है। ध्वनि का विज्ञान है ''Science of Sound'' कितने Hertz के उपर कितने Mega Hertz के ऊपर किस ढंग से बोला जाए तो यह तुम्हें आगे चलकर सुनाई दे उसी चीज़ के माध्यम से Radio की खोज हुई थी।

यह Radio की खोज उसी मंत्र विज्ञान का एक नमूना है। तो हे प्रेमी! यहां सवाल यह है जो कुछ पहले हो रखा उसको मानने या न मानने का सवाल नहीं। तुम राम सेतु को मान लो तब भी वो पत्थर है न मानो तब भी पत्थर ही है। उसमें कुछ बड़ी बात नहीं। पत्थर था, पत्थर है, पत्थर ही रहेगा पर बड़ी बात है हे प्रेमी! जो उस समय का संदेश चलता आ रहा उस संदेश को ग्रहण कर। रावण के पुतले फूंकने से कुछ नहीं होगा। तकरीबन तुम देखोगे जिस मुख्य आतिथि को जिस Chief Guest को बुलाया जाता दशहरे में आकर आग लगाने के लिए उसका रावण

सबसे ऊंचा होता। हे प्रेमी! बाहर का कागज़ी रावण जैसे मर्जी जला दो बाहर हम जो भी करते हैं तकरीबन-2 इसे कहा जाता मन परचावा कि मन की खुशी मन को खुश रखने के साधन हैं। ज्ञान का ध्यान का साधन नहीं इसलिए हमेशा याद रखना जो रावण भीतर है भीतर के रावण को तुम अहंकार, दुर्बुद्धि, मूर्खता को कुछ भी कह लो क्योंकि भीतर का रावण प्रत्येक व्यक्ति का अपना-2 रावण है।

रावण कहता मुझे कहने वालों ने बहुत समझाया मैं नहीं माना। **इसका अर्थ कि तुम किसी को आज समझाओ या अपने आपे को भी समझाओ परन्तु यदि अपने आप को न मना सको तो इसका मतलब रावण हो गये।** रावण कहता जो अच्छाई आई मैंने कल पर टाल दी इसका अर्थ जब भी कुछ उचित करने का विचार तुमने टाला किसी भी तरीके से टाल दिया तो समझ लेना कि अन्दर रावण है। कुछ अन्दर शुभ विचार आए उचित विचार आए अच्छा चलो कल कर लेंगे मतलब रावण जाग गया। रावण कहता जो-2 शुभ था मैंने सारा ही कल पर टाल दिया पर जैसे ही पता चला कि जंगल में कोई स्त्री है। बस इतना सुनते ही उसी समय पहुंच गये वहां पर जैसे ही पता चला कि किसी जगह धन है पहुंच गये वहां पर कहता जो-2 उलट ख्याल थे वो मैंने उसी वक्त धारण कर लिए पर जैसे ही कोई शुभ आया तो सोचा कर लेंगे हो जाएगा।

विचार आया कि समुंद्र का पानी बड़ा नमकीन है किसी काम का नहीं वरूण देवता को कहेंगे मीठा हो जाए, हो जाएगा। टालते-2 जो-2 शुभ आया सब टालते चले गये। जो उलट आया बस उसी क्षण कहीं शूर्पनखा को भेज दिया कटवाने कहीं किसी को। किसी न किसी को लगाए रखा पर कहां? जहां उलट था, शुभ में नहीं। तो हे प्रेमी! यह विदान है किस चीज़ को जीवन भर याद रखना चाहे कैसी भी कुछ भी परिस्थिति आ जाए तूं अपने रावण को अपनी अज्ञानता को दूर कर।

बाहर का रावण पूरे का पूरा सन्देश है पूरा। जैसे हम पुतला जलाते हैं वो सही अर्थों में सन्देश का पुतला है उसको जलाने से पहले देख ले कि जिसे जलाने जा रहा इसके सन्देश क्या हैं? क्योंकि हे प्रेमी! उसके बहुत सन्देश हैं वो रावण ऐसे नहीं कि आग लगाई ठा-ठा हुई चले गये। वो रावण इस काम के लिए नहीं। मन्दिर की घंटी इसी लिए बजती, गुरूद्वारे में पाठी इसलिए बोलता, मस्जिद में आज़ान किस लिए होते कि तुझे याद कराया जाता कि कुछ कर ले वक्त है। इसी तरह हे प्रेमी! रावण का जो पुतला खड़ा हुआ वो भी इसलिए है कि वक्त है कुछ याद कर तूने कुछ करना उसको याद कर वो इस काम के लिए नहीं कि आये और नौ दो ग्यारह हो गये। सो इस लिए विचार करना दशहरा ऐसे ही नहीं देखो मौज मस्ती है वो तो अपनी जगह पर हे प्रेमी! सन्देश का दशहरा कुछ और है, सन्देश का दशहरा बहुत अलग है, **सन्देश का दशहरा यह है कि किसी एक बुराई को पकड़ लें अपने अंदर फिर उसको दूर करें** निश्चित एक बुराई को। एक चीज़ पकड़ लो कि यह हटाना है। हे प्रेमी! मन ऐसा रावण है यह कई कुछ पकड़ता फिर। मन फिर कहेगा अच्छा चल छोड़ अब फिर कर लेंगे फिर ढीला नहीं। जो सोच लिया सो करना है यदि ऐसे निश्चित प्रण कर-2 के कुछ करें तो हे प्रेमी! दशहरे का अर्थ है। नहीं तो दशहरा फिर जलेबियों वाला ही है। खा लिया पी लिया बस। वो मौज मस्ती से ज्यादा नहीं।

Dhammapada

Appamado amatapadam pamado maccuno padam
appamatta na miyanti ye pamatta yatha mata.20
Evam visesato natva appamadamhi pandita
appamade pamodanti ariyanam gocare rata.21
Te jhayino satatika ni ccam dalhaparakkama
phusanti dhira nibbanam yogakkhemam anuttaram.23

Verse 21: Mindfulness is the way to the Deathless (Nibbana); unmindfulness is the way to Death. Those who are mindful do not die; those who are not mindful are as if already dead.

Verse 22: Fully comprehending this, the wise, who are mindful, rejoice in being mindful and find delight in the domain of the Noble Ones (Ariyas).

Verse 23: The wise, constantly cultivating Tranquillity and Insight Development Practice, being ever mindful and steadfastly striving, realize Nibbana: Nibbana, which is free from the bonds of yoga; Nibbana, the Incomparable.

The Story of Samavati

While residing at the Ghosita monastery near Kosambi, the Buddha uttered Verses (21), (22) and (23) of this book, with reference to Samavati, one of the chief queens of Udena, King of Kosambi.

`Samavati had five hundred maids-of-honour staying with her at the palace; she also had a maid servant called Khujjuttara. The maid had to buy flowers for Samavati from the florist Sumana everyday. On one occasion, Khujjuttara had the opportunity to listen to a religious discourse delivered by the Buddha at the home of Sumana and she attained Sotapatti Fruition. She repeated the discourse of the Buddha to Samavati and the five hundred maids-of-honour, and they also attained Sotapatti Fruition. From that day, Khujjuttara did not have to do any menial work, but took the place of mother and teacher to Samavati. She listened to the discourses of the Buddha and repeated them to Samavati and her maids. In course of time, Khujjuttara mastered the Tipitaka.

Samavati and her maids wished very much to see the Buddha and pay obeisance to him; but they were afraid the king might be displeased with them. So, making holes in the walls of their palace, they looked through them and paid obeisance to the Buddha everyday

Part 2 cont...

औषधीय गुणों से भरपूर : अदरक

आम घरों की रसोई में पाया जाने वाला अदरक एक बेमिसाल व औषधीय गुणों से भरपूर होता है। आयुर्वेद में भी अदरक का खूब जिक्र किया है। अब तक आपने महज सर्दी खांसी के लिए अदरक के कारगर होने की बात सुनी होगी लेकिन अब जानिए अदरक के कुछ और अनोखे गुणों के बारे में कि कैसे आदिवासी लोग अदरक का उपयोग तमाम देसी नुस्खों के लिए करते हैं।

दस्त होने की हालत में कच्चे अदरक को हर 2-2 घंटे के अंतराल से चबाया जाए तो बहुत जल्द आराम मिलता है।

जिन लोगों का वचन कम हैं मोटा होने की चाहत है, उन्हें भोजन से 15 मिन्ट पहले अदरक का एक टुकड़ा जरूर चबाना चाहिए, आदिवासियों के अनुसार अदरक खाने से भूख बढ़ती है।

ताजे अदरक को पीसकर या कुचलकर लेप तैयार कर लें। इसमें थोड़ा सा कपूर भी मिलाकर सूजन व दर्द वाले अंगों पर लगया जाए तो काफी आराम मिलता है।

मोच आ जाए तो अदरक का लेप लगाकर रखा जाए तो अदरक का लेप लगाकर रखा जाए, जब लेप सूख जाए तो इसे साफ करके गुणगुने सरसों के तेल से मालिश करनी चाहिए। यह दिन में दो बार दो दिनों तक किया जाए, मोच का असर खत्म हो जाता है।

दांतों में दर्द होते समय अदरक के छोटे टुकड़े दांतों के बीच में दबाये रखने से दांतों में होने वाला दर्द खत्म हो जाता है, सूखे अदरक या सोंठ के चूर्ण में थोड़ा, सा लौंग का तेल मिलाकर दांतो पर लगाया जाए तो दर्द छूमंतर हो जाता है।

दो चम्मच कच्ची सौंफ और 10 ग्राम अदरक एक गिलास पानी में डालकर उसे इतना उबालें कि एक चौथाई पानी बच जाए। एक दिन में 3-4 बार लेने से पतला दस्त ठीक हो जाता है। गैस और कब्ज में भी लाभ दायक होता है।

गाउट और पुराने गठिया रोग में अदरक एक अत्यंत लाभदायक औषधि है अदरक लगभग (5 ग्राम) और अरंडी का तेल (आधा चम्मच) लेकर दो कप पानी में उबाला जाए कि आधा शेष रह जाए। प्रतिदिन रात्रि को इस द्रव का सेवन लगातार किया जाए तो धीर-धीरे तकलीफ में आराम मिलना शुरू हो जाता है। आदिवासियों का मानना है कि ऐसा लगातार 3 माह तक किया जाए तो पुराना जोड़ दर्द भी छूमंतर हो जाता है।

□■□■□

Alexander's Last words:-

Bury my body and keep my hands outside, so that the world knows "The man who won the world had nothing in hand when he left"

वेदांत प्रबोध समिति—वार्षिक कार्यक्रम

प्रेमी सज्जनो,

इस बात से तो प्रत्येक व्यक्ति परिचित है कि वेद अथाह ज्ञान का भंडार है परंतु जरूरत है''उसे'' समझने की जिसमें से वेदों का भी प्रादुर्भाव हुआ है। उस हस्ती शक्ति को परमात्मा कहें या ईश्वर, आनंद कहें या शांति इन शब्दों से फर्क नहीं पड़ता। **जहां से वेदों का प्रदुर्भाव है उसे समझने के लिए तत्ववेताओं ने एक शब्द दिया—वेदांत।** वेदांत अर्थात जहां वेदों का भी अन्त हो गया। जिसकी महिमा गाने में वेद भी असमर्थ है। वेद मानव जीवन के हर विषय को छूते हैं- फिर चाहे धर्म है, अर्थ हो, काम हो या मोक्ष हो। इतना होने पर भी उस आदि परब्रह्म की महिमा वेदों-शास्त्रों-ग्रंथों में समा न सकी।

हरि अनंत हरि कथा अनंता।
कहहिं सुनहिं बहुविधि सब संता।।

दूसरी बात-जिसकी जीवन में हर समय जरूरत रहती है वो है प्रबोध। प्रबोध का अर्थ बोध से जरा सा ऊपर है। बोध का अर्थ है होता है-बुद्धि की जानकारी का अनुभव पर प्रबोध का अर्थ है सदैव उस अनुभव में बने रहना। सतत् प्रयास करना कि मन बारम्बार परमात्म होश में रहे। इन्हीं दोनों शब्दों के अर्थ को जीवन में उतारने के लिए, जीवन को बोधमय बनाने के लिए जो प्रयास किया गया उस प्रयास का नाम है''वेदांत प्रबोध समिति'' जिसका एक ही संदेश है ''know Thyself —अपने आप को जानो।''

आप किस देश में जन्मे ? किस मजहब में जन्मे ? किस जाति में जन्मे ? क्या आपका नाम ? क्या गांव ? क्या काम ? इत्यादि सब प्रश्नों की बजाए एक ही सिरमौर प्रश्न है। वो क्या कि आप हैं कौन ? इसी प्रश्न के जबाव के लिए आप अनेकानेक उत्तर देते हैं कोई कहता मेरा नाम..... है, कोई कहता मेरा धर्म यहा है। प्रश्न वही रहता कि आप कौन ? जबाव बहुत पर ये सब जबाव शरीर का परिचय दे रहे हैं। प्रश्न का संबंध आत्मा की स्थिति के लिए है इसीलिए सब जबाव अधूरे रह जाते हैं। हे प्रेमी ! तूं कौन यह बिना सदगुरू के समझ नहीं आता। बिना सदगुरू यही समझ आता है कि मैं हिन्दू, मैं मुस्लिम, मैं भारतीय, मैं अमेरिकन मैं यह, मैं वह इत्यादि।

पर जब जीवन में वेदांत प्रबोध हो जाए, ज्यों ही जीवन में सदगुरू रूपी सूर्य का उदय हो जाए त्यों ही जीवन की दिशा बदल जाती है। त्यों ही जीवन प्रबोध रूपी प्रकाश से सराबोर हो उठता है। क्योंकि सदगुरू ही हैं जो समझाते हैं कि **''जिस जाया तिस ही जेहा'' या ''ईश्वर अंश जीव अविनाशी।''** इसलिए सदगुरू का प्रयास अधिकाधिक यही रहता है कि जीव कैसे भी समझ जाए। इन्हीं प्रयासों को कहा जाता है हरि चर्चा या संत समागम। ऐसा ही सौभाग्य प्राप्त होता है प्रत्येक वर्ष के जनवरी माह मैं जब वेदांत प्रबोध समिति के सदस्य मिल कर सत्संग का आयोजन करते हैं ताकि नयी जगह, नये जनों के बीच में परमात्मा के सच्चे नाम का प्रसार हो सके।

इस बार यह सुअवसर मिला है अमृतसर की भूमि को जहां 1 जनवरी को श्री गुरू कृपा से महान सत्संग का आयोजन किया जा रहा है। इस ज्ञान यज्ञ में भाग लेने के लिए निम्नलिखित पते पर पहुंचे एवं सत्संग का लाभ उठाएं।

पावन श्री अलख ज्योति महोत्सव की आप सब प्रभु प्रेमी सज्जनों को हार्दिक शुभकामनाएं

1 जनवरी दिन रविवार । **समय** प्रात: 11 से 01 बजे तक। **स्थान—** शिव मन्दिर धर्मशाला नज़दीक रेलवे फाटक, छहरटा, अमृतसर। **सम्पर्क सूत्र** : 9878851511, 9855018590, 9465964184

अधिक जानकारी के लिए Log in करें www.aavpashram.com